संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ नवम्बर २०११
वर्ष : २१ अंक : ५
(निरंतर अंक : २२७)

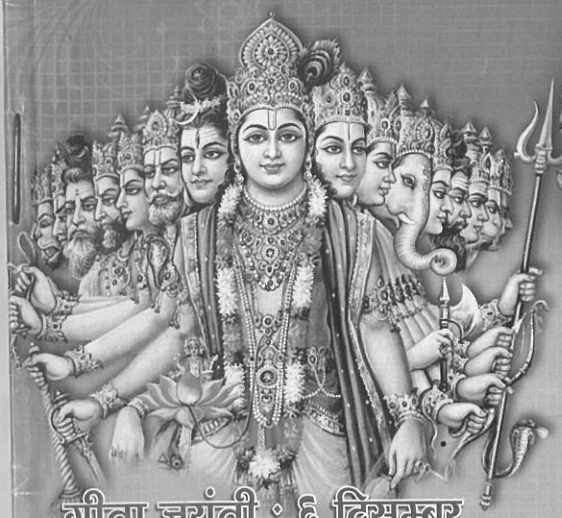

गीता जयंती : ६ दिसम्बर

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

भगवद्गीता ऐसे दिव्य ज्ञान से भरपूर है कि उसके अमृतपान से मनुष्य के जीवन में साहस, हिम्मत, समता, सहजता, स्नेह, शांति और धर्म आदि दैवी गुण विकसित हो उठते हैं, अधर्म और शोषण का मुकाबला करने का सामर्थ्य आ जाता है।

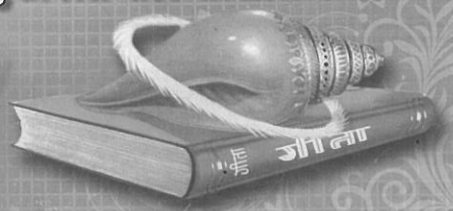

पूज्य बापूजी के सत्संग-कार्यक्रमों में उमड़ा जनसैलाब

मथुरा

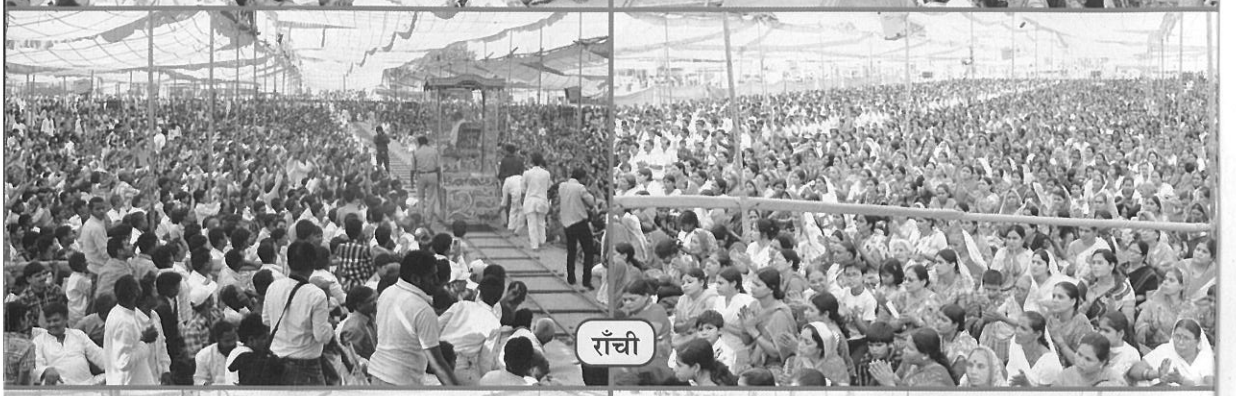
राँची

मोड़ासा (गुज.)

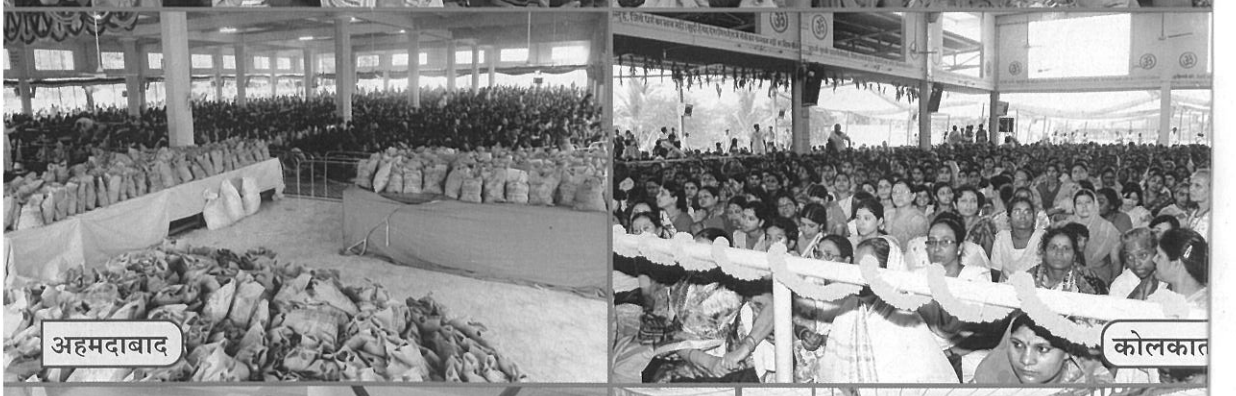
अहमदाबाद

कोलकात

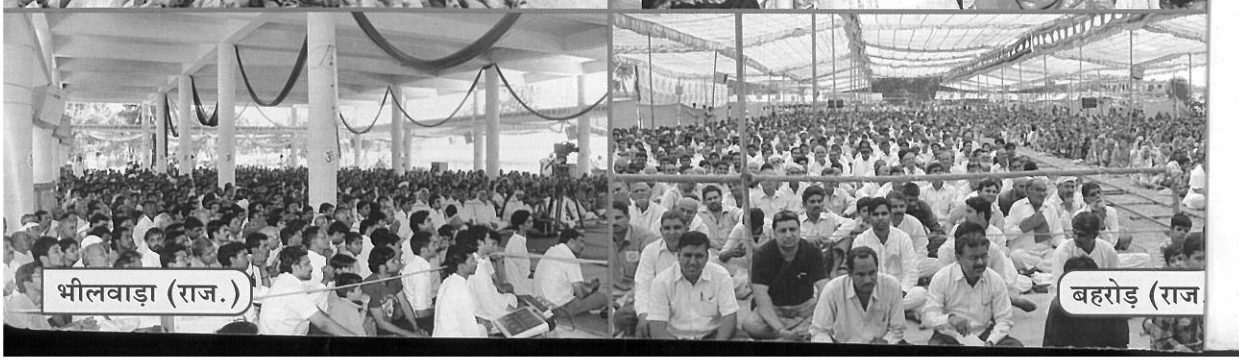
भीलवाड़ा (राज.)

बहरोड़ (राज.

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २१ अंक : ०५
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २२७)
१ नवम्बर २०११ मूल्य : रु. ६-००
कार्तिक-मार्गशीर्ष वि.सं. २०६८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद - ३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	रु. ६०/-	रु. ७०/-
द्विवार्षिक	रु. १००/-	रु. १३५/-
पंचवार्षिक	रु. २२५/-	रु. ३२५/-
आजीवन	रु. ५००/-	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	रु. ३००/-	US $ 20
द्विवार्षिक	रु. ६००/-	US $ 40
पंचवार्षिक	रु. १५००/-	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
: www.rishiprasad.org

इस अंक में...

(१) चिंतनधारा ४
* दुःख : कारण और निवारण
(२) घर रणभूमि नहीं, मंदिर है ५
(३) कुप्रचार बन गया सुप्रचार, महक रहा है संत-दरबार ६
(४) प्रेरक प्रसंग ८
* संत की जयजयकार, निंदक को दुत्कार
(५) साधना प्रकाश ९
* साधना का विहंगम मार्ग : अजपाजप
(६) मधु संचय ११
* उस एक से जुड़े रहो, जो सदा तुम्हारे साथ है
(७) ज्ञान दीपिका १२
* भगवान से नहीं, भगवान की प्रीति से मरते हैं मधु-कैटभ
(८) संत महिमा १४
* शंका नहीं श्रद्धा की आवश्यकता
(९) भगवन्नाम १६
* भगवन्नाम-महिमा
(१०) महापुरुषों के महान लक्षण १७
(११) संत चरित्र १८
* बालक रामदास से बने श्री रामदास काठिया बाबा
(१२) संत वाणी १९
(१३) सद्गुरु-महिमा (काव्य) १९
(१४) ज्ञान गंगोत्री २०
* जो मोक्ष है तू चाहता, विष सम विषय तज तात रे !
(१५) एकादशी माहात्म्य २२
* मोक्षा (मोक्षदा) एकादशी
(१६) पहेलियाँ २३
(१७) प्रेरक प्रसंग २४
* शक्ति का दुरुपयोग, कर देता उससे वियोग
(१८) एक अनोखी, अलौकिक दिवाली २७
(१९) स्वास्थ्य अमृत २९
* अमृतफल आँवला
(२०) संस्था समाचार ३१

विभिन्न टी.वी. चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	आस्था	संस्कार	care WORLD	सत्संग टी.वी.	संस्कार	Ashram LIVE
रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे तथा दोपहर २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)	रोज सुबह ९-४० बजे	रोज दोपहर २-०० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज रात्रि १०-०० बजे	रोज सुबह ८-४० बजे	आश्रम इंटरनेट टी.वी. २४ घंटे प्रसारण

सजीव प्रसारण के समय नित्य के कार्यक्रम प्रसारित नहीं होते।

* A2Z चैनल 'डिश टी.वी.' (चैनल नं. ५७९) तथा रिलायंस के 'बिग टी.वी.' (चैनल नं. ४२५) पर भी उपलब्ध है।
* संस्कार चैनल 'डिश टी.वी.' (चैनल नं. १११३) तथा रिलायंस के 'बिग टी.वी.' (चैनल नं. ६५१) पर भी उपलब्ध है।
* इंटरनेट पर **www.ashram.org/live** लिंक पर आश्रम इंटरनेट टी.वी. उपलब्ध है।

Opinions expressed in this magazine are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

दुःख : कारण और निवारण

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

सात सौ करोड़ लोग धरती पर हैं । कोई ऐसा नहीं कह सकता कि 'मैंने फलाना काम दुःखी होने के लिए किया था अथवा फलाना काम दुःखी होने के लिए करता हूँ ।' सारे जीव, सभी मनुष्य सुबह से शाम तक, जीवन से मौत तक, जीवन भर सुख को थामने और दुःख को भगाने में लगे हैं । फिर भी देखा जाता है कि जीवन में कहीं-कहीं थोड़ा-सा सुख आया, बाकी तो दुःख-ही-दुःख हैं ।

ऋषि से उनके शिष्यों ने प्रश्न किया : ''मनुष्य रोते हुए जन्मता है, फरियाद करते हुए जीता है और निराश होकर मरता है, इसके पीछे क्या कारण है ?''

ऋषि ने उत्तर दिया : ''प्रश्न तो बढ़िया है, मानवमात्र का मंगल करनेवाला है । मनुष्य का वास्तविक सुखस्वभाव, चेतनस्वभाव अकालपुरुष से स्फुरित है । जैसे हर तरंग का मूल स्थान पानी है, ऐसे ही हर जीव का मूल स्थान सच्चिदानंद चैतन्य आत्मा है । वह उस आत्मदेव की प्रीति, आत्मदेव के ज्ञान से स्फुरित होता है । लेकिन बाहर के दृश्य जगत को, माया को सत्य मानकर 'यह पा लूँ, यह भोग लूँ, यह कर लूँ तो मैं सुखी हो जाऊँ' इस वहम से, इस नासमझी से जीव एक दुःख से दूसरे दुःख, दूसरे दुःख से तीसरे दुःख में भटकता रहता है ।''

''तो इसका उपाय ?''

बोले, जिसके जीवन में बाह्य सुख और दुःख, बाह्य अनुकूलता और प्रतिकूलता का ज्यादा महत्त्व है, वह छोटे मन का आदमी है । लेकिन जो बाहर की अनुकूलता को बहुजनहित में लगा देता है, प्रतिकूलता में सम रहता है, **दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । (गीता : २.५६)** जो दुःख में उद्विग्न नहीं होता, सुख में आसक्ति नहीं रखता, ऐसा समत्वयोग को जाननेवाला पुरुष सुख-दुःख के बीच के सत्तास्वरूप साक्षी चैतन्य में टिकता है, वह बाजी मार लेता है ।

सत्संग के बिना एक तो कान के द्वारों से संसार घुसता है, दूसरा आँख के दरवाजों से घुसता है । आँख से कम कान से ज्यादा घुसता है । किसीकी निंदा कान से सुनकर उसके प्रति नफरत हो जाती है । किसी स्थान की प्रशंसा कान से सुनकर उससे आसक्ति हो जाती है । नफरत और आसक्ति हमारी आध्यात्मिक उन्नति में खलबली करती रहती हैं । जैसे पानी में उठ रही तरंग-पर-तरंग शांत पानी की गहराई नहीं देखने देती हैं, ऐसे ही जीव शांत, सुखस्वरूप, चेतनस्वरूप है लेकिन अनुकूलता के लिए तड़प और प्रतिकूलता से भागाभागी की दौड़ में जीव का हौसला खो गया है । भगवदाश्रय, सत्संग का आश्रय लेने से खोये हुए हौसले को फिर पा सकते हैं ।

दक्ष ने बाहर की सफलता को सर्वोपरि माना । हालाँकि दक्ष कोई साधारण राजा नहीं था, कई लोकपालों का अध्यक्ष था । कई राजे-महाराजे जिनके अधीन रहें, ऐसे लोकपालों का भी परम अध्यक्ष और भगवान शिवजी का ससुर था । फिर भी बाहर की चीजों को महत्त्व दिया और अंतरात्मा में गोता मारने से विमुख हो गया तो दक्ष की सारी करी-कमाई चौपट हो गयी, यज्ञ-विध्वंस हुआ, सिर कटा और बकरे का सिर लगा । अभी भी शिवालय में लोग 'बैं-बैं...' करके याद दिलाते हैं कि ईश्वर की प्रीति के बिना, ईश्वर की शांति के बिना तुम बाहर कितनी भी 'मैं-मैं...' करोगे,

आखिर थक के संसार से रवाना हो जाओगे ।

हमारे लिए माँ के शरीर में दूध बनाने की सत्ता उसीकी है । माँ की जेर से नाभि जोड़ने की सत्ता, करुणा उसीकी है । उस परमात्मा के चिंतन से हमारी बुद्धि में परमात्म-रस, परमात्म-ज्ञान, परमात्म-समता आ जाय तो हम संसार में आसानी से सफल हो सकते हैं ।

राजा उत्तानपाद की दो पत्नियाँ थीं, सुरुचि और सुनीति । ध्रुव की माँ थी सुनीति । जो सामने दिखे मन उसके लिए ललक जाय और आगे-पीछे का विचार किये बिना उसके पीछे लग जाय, वह है सुरुचि । आज के जमाने में सुरुचि की दौड़ में लोग बड़े परेशान हो रहे हैं । अनिद्रा का रोग, आत्महत्या की मुसीबत, प्रेमी-प्रेमिकाओं को एड्स, यह सब सुरुचि का ही परिवार है । 'जिसमें रुचि हुई, वह कैसे भी करके करने लगो । चोरी, बेईमानी, कपट कुछ भी करके रुचि के अनुसार पाओ, खाओ, मजा करो' - यह दुःख का कारण है । परिणाम का विचार करके और परिणामों को सफलता देनेवाले परमात्मा में गोता मारकर निर्णय करना, भोगना या पाना यह हो गयी सुमति ।

सुमति की धनी सुनीति का बेटा ध्रुव था और सुरुचि का बेटा उत्तम था । सुरुचि के जीवन में कलह, अशांति रही और उसके पुत्र के जीवन में भी देख लो । वह यक्षों से मारा गया, राजपाट चला गया । सुनीति के बेटे ध्रुव को भगवान के प्यारे संत नारदजी का सत्संग मिला, भगवन्नाम की दीक्षा मिली । सुनीति के पुत्र की मति सुमति हुई, राज्य भी अच्छी तरह से सँभाला और ब्रह्मज्ञान भी पाया । जहाँ सुरुचि है वहाँ आदमी एक दुःख से निकलता है तो दूसरे दुःख में गिर पड़ता है लेकिन जहाँ सुमति है वहाँ दुःख आता है तो भी उसकी शक्ति बढ़ाता है । सुमतिवाला दुःख का भोगी न बनकर दुःखहारी में अपनी गति-प्रीति बढ़ाता है । उसका दुःख भी तपस्या और समता का सुख-साधन बन जाता है । सुमतिवाले के पास दुःख भी साधन बन जाता है और सुख भी साधन बन जाता है । सुरुचिवाले को सुख भोग-विलास करा के खोखला बना देता है और दुःख दूसरों पर दोषारोपण व राग-द्वेष करा के और भी कमजोर कर देता है, रागी-द्वेषी-मोही बना देता है । सुख-दुःख तो सभीके जीवन में आते हैं लेकिन सुमतिवाला इनका सदुपयोग करके परमात्मा तक पहुँचता है और सुरुचिवाला इनमें उलझकर खप जाता है । ❑

घर रणभूमि नहीं, मंदिर है

मन का यह स्वभाव है कि जैसा वह देखता है, वैसे ही विचार उसमें शुरू हो जाते हैं । सभी चाहते हैं कि मन में अच्छे विचार आयें और घर में हमेशा सुख-शांति, समृद्धि बनी रहे । इसके लिए इस बात पर ध्यान देना बहुत जरूरी है कि आप अपने घर को कैसा रखते हैं । घर साफ-सुथरा तो हो पर साथ में घर की दीवारों पर महापुरुषों के श्रीचित्र जैसे पूज्य बापूजी के मनभावन कैलेण्डर, लेमिनेटेड फोटो या प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों को लगायें । इससे मन प्रसन्न रहेगा व जीवनीशक्ति का भी विकास होगा । आपका घर मंदिर बन जायेगा । जैसे अस्पताल को देखने से मरीज की याद आती है, वैसे ही घर की दीवारों पर युद्ध, हिंसा या फिल्मी अभिनेता-अभिनेत्रियों के चित्र लगाने से युद्ध के मैदान व सिनेमाघर की ही याद आयेगी । फलतः मन में वैसे ही विचार उठेंगे और घर में लड़ाई-झगड़े, विकार, अशांति व दुःख हमेशा बने रहेंगे । साथ ही इन चित्रों को देखने से आपकी जीवनीशक्ति का ह्रास भी होगा । आपके परिजनों के साथ आपके संबंधों पर बुरा असर होगा । बुरे चित्र मन को हलके विचारों की तरफ ले जाते हैं । अतः ऐसे-वैसे चित्र लगाकर घर को सिनेमाघर या रणभूमि न बनायें, बल्कि भगवान व संतों के चित्रों से सजाकर अपने घर को मंदिर बनायें ।

कुप्रचार बन गया सुप्रचार, महक रहा है संत-दरबार

अनादिकाल से यह चला आ रहा है कि जब-जब महापुरुष जगत के जीवों का उद्धार करने धरा पर अवतरित होते हैं, तब-तब गुमराह करनेवालों और विधर्मियों ने झूठे आरोप लगाकर उन्हें बदनाम करने तथा उनके दैवी कार्यों में विघ्नरूप बनने की कोशिश की है। इससे वे प्रकृति के कोप के शिकार बनते रहे हैं।

निंदकों के लाख कुप्रयासों के बावजूद ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की जयजयकार होती ही रही है और आज भी हो रही है। चाहे संत ज्ञानेश्वरजी हों, आद्य शंकराचार्यजी, नरसिंह मेहता, संत तुकारामजी या फिर अन्य कोई संत-महापुरुष हों, ऐसे नामी-अनामी महापुरुषों द्वारा लोगों का कितना कल्याण हुआ है इसका अनुमान लगाना मानवी मति से परे है। इन महापुरुषों के बताये मार्ग पर चलनेवाले कितने हैं, इसका भी अनुमान लगाना मुश्किल है।

गुरु नानकजी को दो-दो बार जेल में भी भिजवाया निंदक अभागों ने, फिर भी नानकजी करोड़ों-करोड़ों लोगों के दिल में अपने संतत्व की सुगंध से महक रहे हैं। ऐसे ही स्वामी रामसुखदासजी व अन्य कई संतों को सताया गया किंतु वे अब भी लोगों के दिलों में मौजूद हैं।

'गुरुवाणी' में आया :

संत का निंदकु महा हतिआरा।
संत का निंदकु परमेसुरि मारा॥
संत के दोखी की पुजै न आस।
संत का दोखी उठि चलै निरासा॥

संत कबीरजी ने कहा :

कबिरा निंदक ना मिलो, पापी मिलो हजार।
एक निंदक के माथे पर, लाख पापिन को भार॥

संत तुलसीदासजी ने कहा :

हरि हर निंदा सुनइ जो काना।
होइ पाप गोघात समाना॥
हर गुर निंदक दादुर होई।
जन्म सहस्र पाव तन सोई॥

महापुरुषों की इस शृंखला की वर्तमान कड़ी हैं ब्रह्मज्ञानी पूज्य संत श्री आशारामजी बापू, जो प्राणिमात्र का मंगल करने में सतत लगे हुए हैं। ऐसे संत-महापुरुष को भी विधर्मियों, विदेशी लोगों और मिशनरियों ने बदनाम करने के लिए क्या-क्या नहीं किया, कितने करोड़ रुपये खर्च किये, परंतु इस कुचाल में वे लेशमात्र भी सफल नहीं हो पाये। प्रसिद्ध कहावत है : 'इनकार भी आमंत्रण देता है।' ज्यों-ज्यों विधर्मियों ने झूठी, कपोलकल्पित बातें फैलायीं, त्यों-त्यों जो कभी सत्संग में नहीं आते थे, जो बापूजी को नहीं जानते थे वे लोग भी सच्चाई जानने की उत्सुकता से सत्संग में आने लगे और बापूजी को जानने-मानने लगे।

जब उन्होंने सच्चाई जानी तब उनके हृदय में पूज्य बापूजी के प्रति ऐसी अटल श्रद्धा, ऐसा अटल विश्वास जगा कि सत्संग-कार्यक्रमों में उमड़ती भीड़ ने सारे कीर्तिमान (रिकॉर्ड) तोड़ दिये। इतना कुप्रचार होने पर भी जो अचल हैं, जिनकी मधुर मुस्कान में किंचित् भी कमी नहीं आयी अपितु जिनका ओज-तेज, आभा ऐसी अग्निपरीक्षा में भी तप्त कुंदन की तरह अधिकाधिक उज्ज्वल होती गयी, ऐसे बापूजी से शिक्षा-दीक्षा लेने की लोगों में प्रबल माँग उत्पन्न हुई। इससे बापूजी के साधकों की संख्या में बेहिसाब वृद्धि हुई है।

केवल जनता ही नहीं, अपितु विभिन्न राज्य सरकारें भी विश्ववंदनीय बापूजी के लोक-मांगल्यकारी ज्ञान व सेवा यज्ञों से अभिभूत हुई हैं। अब तक अनेक राज्य सरकारों ने बापूजी को राज्य-अतिथि का दर्जा देकर जनता में सुप्रतिष्ठा एवं

सुयश पाने का सौभाग्य पाया है, जैसे - २६ से २९ अप्रैल २००१ जम्मू-कश्मीर सरकार, १ से ४ जून २००६ एवं १६-१७ जून २००७ हिमाचल प्रदेश सरकार, १२ से १४ जुलाई २०१० ओड़िशा सरकार, १४ से १६ जुलाई २०१० छत्तीसगढ़ सरकार, १६ से १८ जुलाई २०१० मध्य प्रदेश सरकार, २५ से ३० सितम्बर २०१० एवं ६-७ जुलाई २०११ कर्नाटक सरकार।

पूज्य बापूजी की सत्संग-गंगा तो ऐसी है कि यहाँ जो भी, जैसे भी आता है उसके दुःखड़े तो दूर होते ही हैं, आत्मनिष्ठ महापुरुष पूज्य बापूजी के श्रीमुख से निकलनेवाली अमृतधारा से लोगों के जन्म-जन्मांतर के पाप-ताप भी मिटते हैं। उन्हें शाश्वत सुख-शांति की कुछ झलकें मिलती हैं। भक्तियोग, राजयोग, कर्मयोग, कुंडलिनी योग एवं ज्ञानयोग के उच्चतम रहस्यों को सरल भाषा में समझने का तथा उनके द्वारा व्यावहारिक एवं पारमार्थिक उन्नति करने का मार्ग प्रशस्त होता है। श्रद्धालुओं की भीड़ तो बढ़ी, साथ ही सत्संग-कार्यक्रमों की माँग भी इतनी बढ़ी कि बापूजी को किसी-किसी दिन ३-३, ५-५ जगहों पर हेलिकॉप्टर के द्वारा जा-जा के देशवासियों की माँग पूरी करनी पड़ी। वर्ष २००८ से वर्ष २०११ तक बापूजी के सत्संग-कार्यक्रमों की संख्या में लगातार वृद्धि होती गयी। आइये, नजर डालते हैं आँकड़ों पर :

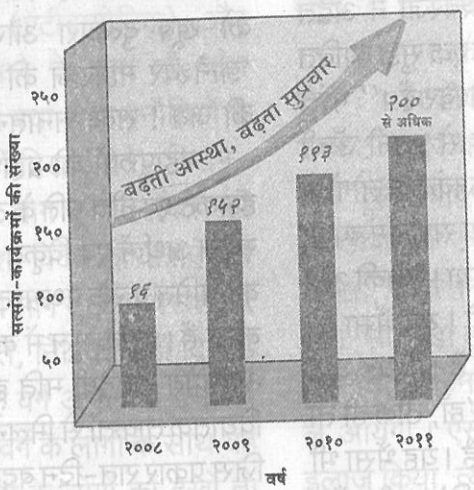

वैसे तो शुरू से ही पूज्यश्री के जनजागृति के कार्य में विधर्मियों व दुष्ट मति के लोगों द्वारा विघ्न उपस्थित किये जाते रहे हैं, परंतु एक सोची-समझी कुनीति के तहत सन् २००८ से कुप्रचार-अभियान ही प्रारम्भ हुआ था। उस वर्ष १६ राज्यों के ९६ विभिन्न स्थानों में बापूजी के कार्यक्रम हुए थे। इसके बाद देश को तोड़नेवाली विदेशी ताकतों द्वारा करोड़ों रुपये खर्च किये गये तथा कुप्रचार ने और जोर पकड़ा परंतु इसका असर उलटा ही हुआ। सन् २००९ में सत्संग की माँग बढ़ गयी, जिससे देश के १३ राज्यों व नेपाल सहित कुल १५२ स्थानों में कार्यक्रम हुए।

सन् २०१० में श्रद्धालुओं की संख्या में हुई बढ़ोतरी को ध्यान में रखते हुए पूज्यश्री को १७ राज्यों में १९३ स्थानों में कार्यक्रम देने पड़े। इस वर्ष तो बापूजी को अनेक बार एक दिन में ५-५ जगह कार्यक्रम देने पड़े।

सन् २०११ में अब तक १७ राज्यों में १८१ स्थानों में कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं और वर्ष के अंत तक २०० का आँकड़ा पार होने का अनुमान है।

अब तो ऐसी स्थिति है कि इतने सत्संग-कार्यक्रम देने के बावजूद भी कई स्थानों का नम्बर लगने में वर्षों लग रहे हैं। सत्संग-दर्शन के लिए लालायित जनता बड़े-से-बड़े सत्संग-स्थल को बौना साबित कर रही है।

बापू के दीवाने बहकाये नहीं जाते।
कदम रखते हैं आगे तो फिर लौटाये नहीं जाते॥

कुछ निंदक चैनलों की टी.आर.पी. और गुजरात के एक भ्रष्ट अखबार का सर्क्युलेशन बुरी तरह घटा लेकिन सत्संगियों की संख्या और सत्संग-कार्यक्रम बढ़ते ही गये। वे अब भी सुधर जायें, उदार आत्मा संत और उनके भक्त प्रसन्न होंगे। ❑

संत की जयजयकार, निंदक को दुत्कार

(संत ज्ञानेश्वर महाराज पुण्यतिथि : २३ नवम्बर)

एक बार भरी सभा में ज्ञानेश्वरजी ने अद्वैत वेदांत की ऊँची बात सुनायी । तब एक सुज्ञ व्यक्ति ने कहा : ''ये तो सचमुच ही ज्ञानेश्वर हैं ।'' परंतु १२ वर्ष के बाल ज्ञानेश्वर के मुँह से इतनी ऊँची बात सुनकर स्थूल बुद्धिवाले समाजकंटक लोगों ने उनका मजाक उड़ाया । उसी समय सभा-मंडप के बाहर रास्ते पर एक भैंसा दिखाई दिया । उसकी ओर देखते हुए कोई बोल उठा : ''अजी ! यह भैंसा जा रहा है । इसका भी नाम ज्ञानेश्वर है !'' यह बात सुनते ही बाल ज्ञानेश्वर ने कहा : ''हाँ, ठीक ही तो है । इसमें और हममें कोई भेद नहीं है । यह भैंसा भी मेरा ही आत्मा है । यदि आप ज्ञान की सच्ची आँख से देखेंगे तो भैंसे में और हममें किंचित् भी भेद नहीं दिखेगा । सब देहों में, प्राणिमात्र में समानरूप से वही आत्मा व्याप्त है । असंख्य घड़ों में जल भरा हुआ है और उन सबमें एक ही चाँद चमक रहा है, उसी प्रकार सब प्राणियों में समान रूप से भगवान व्याप्त हैं । अलग-अलग प्रकार की वनस्पतियाँ हैं पर सबके मूल में एक ही जल व्याप रहा है, वैसे ही सब जीवों में एक रमापति परमात्मा ही व्याप रहे हैं ।''

जब ये बातें हो रही थीं तभी उस निंदक ने भैंसे की पीठ पर सटाक-से तीन चाबुक लगाये । ज्ञानेश्वर महाराज समझ गये कि यह लोगों की श्रद्धा तोड़ना चाहता है । उनके हृदय में ईश्वर की सर्वसमर्थता को प्रकट कर लोगों की श्रद्धा की रक्षा करने का संकल्प उदित हुआ और उसी समय उनकी पीठ पर रक्तमय लाल निशान दिखने लगे ! सैकड़ों लोगों ने देखा कि चाबुक तो लगे भैंसे की पीठ पर किंतु निशान पड़े बालक ज्ञानेश्वर की पीठ पर ! यह देखते ही लोगों ने उस निंदक को खूब दुत्कारा और जयघोष करने लगे : 'ज्ञानेश्वर महाराज की जय ! सर्वसमर्थ भगवान की जय ! सत्य सनातन संस्कृति की जय !'

महापुरुषों की ब्रह्मभाव से पूर्ण वाणी में कुछ हलकट एवं नीच मति के लोग दोष देखते हैं और उसे स्थूल अर्थ में एवं विकृत रूप में प्रस्तुत कर समाज को भ्रमित करके पथभ्रष्ट करने की घृणित कोशिशें करते हैं । इसके मूल में कभी उनकी नास्तिकता से ओतप्रोत संतद्वेषी मति होती है तो कभी समाज-विघातक ताकतों से मिलनेवाले धन का लोभ ! परंतु जिस प्रकार रात-दिन बदबू का ही फैलाव करनेवाले नाली के कीड़ों के भाग्य में आखिर डी.डी.टी. (कीटनाशक) का छिड़काव ही लिखा होता है, उसी प्रकार समाज की श्रद्धा व सुख-शांति को नष्ट-भ्रष्ट करने में लगे हुए समाजद्रोही निंदकों के भाग्य में समाज की फटकार व दुत्कार ही लिखी होती है । ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों की भक्ति, योग, ज्ञान एवं सत्कर्म की गंगा तो बहती ही रहती है और लोगों द्वारा उनकी जयजयकार होती ही रहती है । ❑

ऋषि प्रसाद ई-मैगजीन

अब इंटरनेट के द्वारा आप कहीं भी ऋषि प्रसाद की ई-मैगजीन तथा मुद्रित (प्रिंटेड) प्रति के भी ऑनलाईन सदस्य बन सकते हैं । क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड द्वारा ऑनलाईन सदस्यता राशि जमा करने की सुविधा उपलब्ध ।

बस www.rishiprasad.org पर लॉग-इन करें और पत्रिका तैयार !

साधना का विहंगम मार्ग : अजपाजप

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

प्रतिजैविक औषध (एंटीबायोटिक) और पेनकिलर, क्या-क्या खाने के बाद भी लोग तंदुरुस्त दिखाई नहीं देते । क्या-क्या मनौतियों के बाद भी लोग निश्चिंत नहीं दिखाई देते । कितने-कितने उपायों के बाद भी लोग पूरे आनंदित नहीं दिखाई देते । क्या-क्या देश-विदेश की यात्राएँ और आविष्कार करने के बाद भी लोग सुखी, स्वस्थ और सम्मानित नहीं दिखाई देते, निश्चिंत नहीं दिखाई देते । ऐसा नहीं कि अमुक वर्ग अभागा है इसलिए वह दुःखी है, प्रायः सभी वर्ग के लोगों के साथ यह समस्या है । किसी भी वर्ग के लोगों को देखो तो उनके स्वास्थ्य का, मानसिकता का, बौद्धिकता का ठिकाना नहीं है । एक-दूसरे पर दोषारोपण करना, अपने को, दूसरों को या भाग्य को कोसना । दीनता-हीनतावाली मान्यता कि 'भगवान दया करेंगे, भविष्य में कोई देव, कोई अल्लाह, कोई गॉड कृपा करेगा...' उसी-उसीमें लाचारी-मोहताजी के साथ मानव घसीटा जा रहा है ।

इन्द्रियों का स्वामी मन है और मन का स्वामी प्राण हैं । प्राण तालबद्ध न होने के कारण मन तालबद्ध नहीं, इसलिए इन्द्रियों पर मन का शासन ठीक नहीं चलता । आँख ने दिखा दी कोई सुंदरी या सुंदरा, इन्द्रियाँ उसकी ओर आकर्षित हो गयीं, मन सहमत हो गया और बुद्धि को घसीट लिया । अपनी पत्नी होते हुए अथवा मर्यादा के खिलाफ होने पर भी स्त्री-पुरुष का आकर्षण नींद हराम कर देता है, स्वास्थ्य खराब कर देता है । औषधियाँ लेते हैं, इंजेक्शन भोंकवाते हैं, शल्यक्रिया (ऑपरेशन) भी कराते हैं, आयुर्वेदिक उपचार भी करते हैं, फिर भी शरीर का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता । थोड़े दिन ठीक रहा-न रहा फिर बेठीक हो जाता है । आज के मानव की यही समस्या है । वास्तव में स्वास्थ्य का, सुख का, आनंद का, माधुर्य का और सारी समस्याओं के समाधान का स्रोत जो है, उसको मानव भूलता चला गया ।

कूड़ा-करकट है तो उस पर चादर डाल दी, बोले : 'अब ठीक हो गया ।' समय पाकर कूड़ा-करकट चादर को भी कूड़ा-करकट बना देगा । फिर दूसरी चादर... तीसरी चादर... ये-वो । ऐसे ही ऊपर के उपचार हैं । उनसे रोग, दीनता-हीनता, रिएक्शन भविष्य की तकलीफें बढ़ती हैं । जरा-सी पीड़ा हुई तो पेनकिलर ले ली । पीड़ा तो दब गयी लेकिन वह पेनकिलर और भी मुसीबत ले आयेगी । ऐसे उपाय करते हैं कि 'ज्यों-ज्यों इलाज किया, त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता गया ।' इसलिए तो जीवन नहीं है ! सही उपाय है रोग के मूल को समझना और सही उपचार वह है जो रोग के मूल को उखाड़ के आपको स्वास्थ्य दे ।

विषय पाँच हैं - शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध । गाना-बजाना और अपनी खुशामद सुनना यह शब्द-विकार है । पति-पत्नी का स्पर्श-विकार है । जीभ को मजा आये केवल इसलिए ऐसे व्यंजन खाना जिनसे बीमारियाँ होती हैं, यह भी एक विकार है । इन पाँचों विकारों के मूल में देखो तो केवल दो ही कारण हैं - राग और द्वेष । राग से खाया तो बीमार पड़ोगे । राग से पत्नी के साथ व्यवहार किया तो जल्दी बूढ़े बनोगे । राग से किसीसे जुड़े तो ममता हो जायेगी । द्वेष से किसीके साथ अन्यायपूर्ण

व्यवहार करोगे तो भी फँसोगे । इस राग-द्वेष को शिथिल करना, इस पर नियंत्रण पाना अथवा राग-द्वेष को बाधित करना यह बहुत ऊँचा साधन है । इससे शारीरिक स्वास्थ्य हँसते-खेलते मिलेगा, मानसिक प्रसन्नता और संतुष्टि अपने घर की चीज हो जायेगी तथा बौद्धिक विकास कल्पनातीत होगा । बड़े-बड़े बुद्धिमान लोग संतों से मार्गदर्शन लेते हैं । संत डॉक्टरी नहीं पढ़े हैं लेकिन डॉक्टर उनसे मार्गदर्शन लेते हैं । संत नेतागिरी नहीं जानते पर नेता आशीर्वाद लेते हैं । तो आखिर उन महापुरुषों के पास ऐसी कौन-सी चीज है ?

बोले : 'भगवान ।'

अगर उनके पास भगवान हैं तो आपके पास क्या है ? शैतान है क्या ? वैसे-का-वैसा भगवान तो आपके पास भी है लेकिन मनमुखता एक शैतानियत है । जो गुरुदेव बता दें उसी रास्ते चलें तो कहाँ-से-कहाँ पहुँच जायेंगे । उस आत्मदेव में विश्रांति पानेवाली साधना सीख लो तो रोग यूँ मिटते हैं, चिंताएँ यूँ जाती हैं, बेवकूफी यूँ भागती है और भगवद्-लाभ सहज में होता है ! दीक्षा के समय सभीको सिखाया जाता है और कहा जाता है कि 'श्वासोच्छ्वास में पचास की गिनती हररोज करनी है, जिससे मन नियंत्रित हो, प्राण तालबद्ध हों और आयु-आरोग्य पुष्ट रहे ।' जो लोग आज्ञा का पालन करके करते होंगे उनको तो लाभ होता होगा लेकिन इस लाभ की महिमा न जानने के कारण खानापूर्ति कर देते होंगे तो खानापूर्ति जैसा लाभ होता होगा । इसमें मन की सजगता, प्राणों की तालबद्धता और आपकी वेदांतिक समझ - ये तीनों चीजें जरूरी हैं ।

'अजपा गायत्री' श्वासोच्छ्वास की साधना है । इससे आत्मवैभव जगता है । आत्मा ज्ञानस्वरूप है और बड़ा संवेदनशील तत्त्व है । जैसे माँ की जेर के साथ बच्चे की नाभि जोड़ना कितना भारी काम है ! वह आत्मसत्ता ही तो करती है । माँ के शरीर में दूध बनाना, यह न माँ करती है, न बाप करता है, न बेटा करता है, न चिकित्सक करता है, वही आत्मसत्ता करती है । उस आत्मसत्ता से जुड़े हैं प्राण । प्राणों का संचार अच्छा तो रक्त-संचार भी अच्छा, रक्त-संचार अच्छा तो स्वास्थ्य अच्छा । श्वासोच्छ्वास की साधना करो, श्वास अंदर जाय तो 'ॐ', बाहर आये तो गिनती । इससे श्वास तालबद्ध होंगे । श्वास तालबद्ध होंगे तो मन आत्मा के साथ जुड़ेगा, बुद्धि बलवान होगी व मन को नियंत्रण में करेगी, इन्द्रिय-संयम रहेगा और संयम से अंतरात्मा का सुख भी मिलेगा, मन भी प्रसन्न रहेगा, बुद्धि में भी ज्ञान आयेगा और इससे असाध्य रोग भी अपने-आप मिट जाते हैं । (क्रमशः) ❑

नूतन वर्ष कैलेण्डर-सेवा अभियान

(नूतन वर्ष के अवसर पर सुमधुर, सुंदर, सत्प्रेरणा देनेवाले कैलेण्डर बहुतों तक पहुँचाने का शुभ संकल्प)

गुरु की सेवा साधु जाने, गुरु सेवा कहाँ मूढ पिछानै ।

पूज्य बापूजी के सत्प्रेरणा व शांतिप्रदायक एवं चित्ताकर्षक श्रीचित्रों तथा अनमोल आशीर्वचनों से सुसज्जित वर्ष २०१२ के वॉल कैलेण्डर, पॉकेट कैलेण्डर, टेबल कैलेण्डर व दैनंदिनी (डायरी) उपलब्ध हैं ।

सभी साधक भाई-बहन अपने परिचितों में नये वर्ष के कम-से-कम २५-५० कैलेण्डर अवश्य बाँटें तथा अपने साधक व्यापारी मित्रों से भी कम-से-कम २५० से १००० तक कैलेण्डरों का सौजन्य अवश्य करवायें । सौजन्य करानेवाले का नाम कैलेण्डरों पर छपवाकर दिया जायेगा ।

उस एक से जुड़े रहो, जो सदा तुम्हारे साथ है

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

संसार में सुखी होने की इच्छा छोड़कर आत्मा में विश्रांति पाओ। स्वार्थ छोड़कर परमार्थ में लगो। संसारी सुख की लोलुपता छोड़ दो। बिना मन के, बिना सामान के, बिना साथी के जीवन जीना सीख लो। मन के गुलाम रहोगे तो अंदर में कमजोरी बनी रहेगी।

कहीं भी मन न लगे, उसको बोलते हैं बेमन। व्यवहार करते, खाते-पीते रहो लेकिन कहीं भी मन न लगे, आसक्त न हो, फँसे नहीं। गहरी नींद में कहाँ मन लगता है ? जाग्रत अवस्था के सारे संबंध काट देते हैं तभी गहरी नींद में पहुँचते हैं। कितना आराम होता है ! ऐसे ही दिन में भी वहाँ बैठो जहाँ किसी साथी से, किसी सामान से मन जुड़ा न हो।

न किसी साथी के साथ जन्मे थे, न मरेंगे। अकेले आये थे, अकेले जायेंगे। अकेलेपन का जो आधार है उसमें विश्रांति पाओ। गहरी नींद में हररोज अकेले होते हो तब सुख पाते हो, तो कभी जाग्रत में भी अकेले बैठने का अभ्यास करो, जहाँ कोई मित्र नहीं। बिना मित्र के रहो अपना मजा लेने के लिए। बाहर के मित्रों में उलझोगे तो असली मित्र खो बैठोगे और असली मित्र से मिलोगे तो बाहर के सारे मित्रों का भला हो जायेगा। अगर भगवान से आप एकाकार हो गये तो लाखों-करोड़ों मित्रों का भला हो जायेगा। अगर मजा लेने के लिए किसी प्रेमी-प्रेमिका से दोस्ती की तो उसका भी सत्यानाश और अपना भी सत्यानाश ! संयमी-सदाचारी बनो, उस एक से जुड़े रहो, जो सदा तुम्हारे साथ है।

कबीरा इह जग आयके बहुत से कीन्हे मीत।
जिन दिल बाँधा एक से वे सोये निश्चिंत ॥

नहीं तो वह हाल होगा कि

इक दिल के टुकड़े हजार हुए।
कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा ॥

थोड़ा इधर दिल लगा, थोड़ा उधर दिल लगा। गाड़ी का स्टियरिंग तो दफ्तर में पड़ा है और पहिये गैरेज में पड़े हैं। इंजन गोदाम में पड़ा है और गाड़ी के खोखे (ढाँचे) में बैठ के चलाओ तो क्या खाक गाड़ी चलेगी ! ऐसे ही थोड़ा मन इधर दिया, थोड़ा उधर दिया तो ईश्वर की तरफ जीवन की गाड़ी कैसे चलेगी ! मन इधर-उधर जाने दिया तो ईश्वर की तरफ कैसे चलेगा !

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

'सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्य-कर्मों को मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वाधार परमेश्वर की ही शरण में आ जा।'

(गीता : १८.६६)

सारे आकर्षणों को, विकर्षणों को छोड़कर मुझ परमात्मा की शरण आ जाओ।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥

'तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।'

(गीता : १८.६२)

शाश्वत स्थान तुम्हारा आत्मदेव है और वह दूर नहीं, दुर्लभ नहीं, परे नहीं, पराया नहीं।

बेमन, बेसाथी, बेसामान का जीवन फटाक-से ब्राह्मी स्थिति में टिका देगा । शरीर रहते ही अशरीरी आत्मा में... सबके बीच रहते हुए भी बेसाथी... सबके साथी के साथ एक... कर्म करते हुए भी कर्म का चिंतन नहीं ।

कर्म जिससे किये जाते हैं, कर्म हो-होकर फल दे-दे के मिट जाते हैं फिर भी जो नहीं मिटता, उसका चिंतन करें तो सभी मनों के स्वामी, सभी साथियों के साथी बन जाओगे । जो किसीका साथी रहता है वह किसीका असाथी होता है । जो किसीका साथी नहीं, वह सभीका साथी बन जाता है । पत्नी का साथी, पति का साथी... एक-दो दायरे में रह जायेगा । दायरा छोड़ दे । सर्वव्यापक सर्वेश्वर के साथ तेरा शाश्वत संबंध है । बेमन, बेसाथी, बेसामान होकर अकेले में बैठो । बाहर से भले दुनिया की भीड़ हो लेकिन अंदर में अकेले अपने-आपमें...

हम हैं अपने-आप, हर परिस्थिति के बाप !

सभी परिस्थितियाँ आती और जाती हैं पर सदा रहनेवाले मेरे प्रभु, मेरे गुरुदेव मेरे हैं । शरीर छोड़कर मरेंगे तब भी जो रहेगा, वह मेरा साथी है, मेरा प्रभु है । वास्तव में सच्चा साथी वह परमात्मा था, है और रहेगा ।

आदि सचु जुगादि सचु ।
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ ❑

व्रत, पर्व और त्यौहार

२१ नवम्बर : उत्पत्ति एकादशी
२३ नवम्बर : संत ज्ञानेश्वर महाराज पुण्यतिथि
१ दिसम्बर : गुरु तेगबहादुर शहीद दिवस
६ दिसम्बर : मोक्षदा एकादशी, श्रीमद् भगवद्गीता जयंती
१० दिसम्बर : व्रत पूर्णिमा, श्री दत्तात्रेय जयंती, खग्रास चन्द्रग्रहण (ग्रहण-वेध : सुबह ९-१५ से, ग्रहण-समय : शाम ६-१५ से रात्रि ९-४८ तक)

भगवान से नहीं, भगवान की प्रीति से मरते हैं मधु-कैटभ

(पूज्य बापूजी की ज्ञानमयी अमृतवाणी)

जिसके प्रति द्वेष है उसके प्रति मधुरता लाओ और जिसके प्रति राग है उसके प्रति विवेक जगा के वैराग्य लाओ । राग की जगह पर वैराग्य और द्वेष की जगह पर प्रेम लाओगे तो ये राग-द्वेष मरेंगे अन्यथा नहीं मरेंगे ।

ऋषिकेश में एक मंदिर था । उसमें भक्त लोग तो ठाकुरजी की पूजा करके सामग्री चढ़ा जायें और सर्पिणी निकले बिल से और वहाँ मंदिर में मौज मारे । एक दिन उसका मजा उसके लिए सजा बन गया । नेवला आया । नेवला सर्पिणी को मारे, सर्पिणी नेवले को डँसे । घमासान युद्ध चलते-चलते सर्पिणी ने नेवले को काटा लेकिन नेवला सर्पिणी के जहर से ऐसा क्रुद्ध हुआ कि उसने सर्पिणी को मार डाला । दोनों वहाँ मरे । समय की धारा में जो नेवला था वह मर के कोसल नरेश का पुत्र हुआ और जो सर्पिणी थी वह प्रागज्योतिष नरेश की कन्या हुई । फिर उनका शुभ विवाह हुआ । उनका आपस में बड़ा स्नेह, प्रेम रहता था ।

एक दिन राजकुमार ने राज-उद्यान में इधर-उधर विचरण करते-करते किसी सर्पिणी को देखा । पूर्व का जो नेवला था, वह अभी राजकुमार है । मरने के बाद भी द्वेष रहता है । सर्पिणी के प्रति उसका द्वेष जगा और सर्पिणी को मारने गया तो अगले जन्म

की सर्पिणी, अभी जो राजकुमारी है, बोली : ''नहीं मारिये, इस बेचारी को मत मारिये । मुझे अच्छा नहीं लगता, मत मारिये ।'' क्योंकि सर्पयोनि से आयी थी वह । राजकुमारी का सर्पिणी के प्रति राग था ।

राजकुमार बोला : ''तू हट, तुझे क्या पता !'' मार डाला सर्पिणी को ।

इतने में कहीं से नेवला आया । राजकुमारी मारने दौड़ी । राजकुमार बोला : ''इसको मत मार । यह तो शुभ होता है, मंगलकारी होता है, शुभ शकुन है । राजाओं का यह प्रिय होता है । इसे मत मारना । यह तो होना चाहिए । यह मनुष्य को काटता नहीं, मारता नहीं । सर्पिणी दुष्ट थी ।''

राजकुमारी बोली : ''आपको क्या पता !''

राजकुमार के रोकने पर भी उसने नेवले को मार डाला । अब राजकुमार बिगड़ा : ''तू कैसी स्त्री है ! पति के मना करने पर भी निर्दोष प्राणी को मार दिया, और यह तो शुभ है । तेरे बाप का क्या है !...'' ऐसा-वैसा सुना दिया । आखिर में झगड़ा यहाँ तक पहुँचा कि राजकुमार को उद्वेग हुआ । राजकुमार को, कोसल नरेश के पुत्र को इतना उद्वेग हुआ कि बोला : ''जा कुलटा ! मैं तेरा त्याग करता हूँ ।''

सद्गुरु शिष्य को कह दें कि 'मैं तेरा त्याग करता हूँ' तो शिष्य की तबाही की आखिरी हद है और यही पतिव्रता स्त्री को पति कह दे तो स्त्री के लिए तो पैरों तले से धरती निकल गयी ।

कोसल नरेश को पता चला कि ये आपस में रूठ गये हैं और एक-दूसरे के पति-पत्नी तो क्या एक-दूसरे की छाया भी इनको भारी पड़ रही है । तो कोसल नरेश ने राजदरबार में बेटे को कहा : ''पुत्र ! तुम्हारी माँ के द्वारा और खबरों के द्वारा मुझे पता चला है कि जब से तुम राज-उद्यान से आये हो, तब से तुम्हारा व्यवहार बड़ा विचित्र हो गया है ।''

राजकुमार बोला : ''पिताश्री ! गुरु के आगे और पिता के आगे कोई बात छुपाना अपने विनाश का कारण है । मंत्री लोग अपनी-अपनी जगह पर अपने-अपने काम में चले जायें ।''

राजसभा बरखास्त कर कोसल नरेश को पुत्र ने कहा : ''पिताश्री ! इस जन्म की जो घटना हुई इसके पीछे पिछले जन्म के संस्कार हैं । और कथाओं में सुनते हैं कि भगवान नारायण पाँच हजार वर्ष तक मधु-कैटभ दैत्यों से भिड़ते रहे । यह बिल्कुल सत्य घटना है । मधु-कैटभ अर्थात् राग और द्वेष, ये मधु-कैटभ संसार से वैराग्य और भगवान में प्रीति किये बिना मरते ही नहीं । चाहे आपके पास भगवान नारायण जितना बल हो, फिर भी नहीं मरते । इनको मारने के लिए तो त्याग और प्रीति चाहिए । विषय-विकारों का त्याग और भगवान में प्रीति, इसीसे यह जन्म-मरण का चक्कर टूटेगा । पिताश्री ! मैं आपको व्याख्या करके सुनाऊँ, ऐसा मुझमें बल नहीं है और मैं गुरु भी नहीं हूँ । आप मेरे साथ जहाँ भगवान ऋषिकेश प्रकट हुए थे, ऋषि की १० हजार वर्ष की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ने उन्हें वरदान दिया था, उस जगह पर ऋषिकेश में चलें । वह स्थान दिखाकर मैं अपने और आपकी बहू के पूर्वजीवन की घटना बताऊँगा ।''

राजा ने मंत्रियों को आदेश दिया और समय पाकर वे वहाँ आये तो राजकुमार ने वही मंदिर, वही बिल और वही सर्पिणी व नेवले का क्षेत्र दिखाया और बताया कि ''मैं नेवला था और आपकी पुत्रवधू सर्पिणी थी । सर्प और नेवले की नीच योनिवाले हम इस क्षेत्र में लड़ते-लड़ते, द्वेष से भिड़ते-भिड़ते मर गये तो भी रैभ्य मुनि की तपस्या का प्रभाव, भगवान नारायण ऋषिकेश का प्राकट्य-प्रभाव और गंगाजी के प्रभाव से राजकुमार और राजकुमारी बने । फिर जो यहाँ पर दान, स्नान, जप, सत्संग-श्रवण आदि करते हैं, उनकी सद्गति का तो कहना ही क्या है !'' ❑

शंका नहीं श्रद्धा की आवश्यकता

सन् १९५२ की बात है, भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज गोधरा (गुज.) पधारे थे। सत्संग में उन्होंने कहा कि ''यती रात्रि को तीन बजे के बाद नहीं सोते।''

एक कमजोर हृदय के व्यक्ति ने सोचा कि 'देखूँ तो वे स्वयं भी ऐसा करते हैं कि सिर्फ कहते ही हैं !' वह व्यक्ति पूज्यचरण की सेवा में ही था। उसका नाम था जेठानंद। स्वामीजी ने रात के १२ बजे उसे बुलाकर कहा : ''पंखा चालू कर दो, मच्छर सोने नहीं दे रहे हैं।'' उसने पंखा चालू कर दिया। महाराज आराम से सो गये।

तीन बजने में पाँच मिनट बाकी थे, उस व्यक्ति के शंकालु मन ने कहा : 'देखो, स्वामीजी तीन बजे उठते हैं कि नहीं ?' उसके मन में हलचल हो रही थी। दरवाजे की ओट से झाँककर देखा तो स्वामीजी आराम से सो रहे थे। ठीक चार मिनट के बाद स्वामीजी उठे और ध्यानमग्न हो गये। अब उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसकी अंतरात्मा ने उसे फटकारा कि 'तेरा विश्वास कच्चा है।' वह दबे पाँव वापस आकर अपने बिस्तर पर लेट गया, पर उसका दिल उदास था और मन में एक बोझ था।

स्वामीजी नित्य प्रातः टहलने जाते थे। उस दिन भी पाँच बजे और स्वामीजी जंगल की ओर सैर करने निकल पड़े। जेठानंद भी उनके साथ गया। उसके मन में यही विचार चल रहा था कि 'अपनी भूल का प्रायश्चित कैसे करूँ ?' अचानक स्वामीजी एक नीम के पेड़ के नीचे खड़े हो गये और बच्चों की तरह कहने लगे : ''नीम मैया ! दातुन नहीं दोगी ? दो-चार बढ़िया दातुन नहीं दोगी ?''

जेठानंद पेड़ पर चढ़ने के लिए जैसे ही तैयार हुआ, उसे रोककर स्वामीजी बोले : ''पागल ! गिर पड़ेगा।''

उसने कहा : ''स्वामीजी ! पेड़ पर चढ़े बिना दातुन कैसे मिलेगी ?''

स्वामीजी : ''बस, यह अविश्वास ही हमारे बीच में दीवार बनकर खड़ा है। विश्वास बिल्कुल नहीं रख पाते हैं। बेटा ! विश्वास रखना चाहिए।''

इतने में एक लम्बा-सा साँवले रंग का अजनबी आदमी आया। उसने पाँच-छः सुंदर टहनियाँ तोड़कर स्वामीजी को दीं।

स्वामीजी बोले : ''बस, बहुत हो गयीं।''

जेठानंद को समझ में नहीं आया। वह रुककर उस अजनबी से कुछ पूछना चाहता था। इतने में कृपालु दाता ने उसका हाथ पकड़कर आगे बढ़ने को कहा। संत अपनी मस्ती में थे और जेठानंद अपनी बुद्धि की सुस्ती में सोचे जा रहा था। जब वे जंगल में काफी आगे निकल गये, तब निजानंद में तृप्त संतसम्राट ने कहा : ''इच्छाशक्ति धारण करने से सारे कार्य सिद्ध होते हैं। आगे बढ़ना चाहिए परंतु गहराई में नहीं जाना चाहिए।'' उनकी अनुभव-सम्पन्न वाणी सुन उसकी आँखें खुल गयीं। उसे ऐसा लगा मानो वर्षों से पड़े अँधेरे कमरे में किसीने दीप जला दिया हो।

पूज्य साँईं आगे बढ़े, नदी के तट पर चलने लगे। जेठानंद को भारत-विभाजन में अपना सब कुछ सिंध में छोड़ना पड़ा था, इस कारण वह काफी दुःखी था और मुसलमानों के प्रति द्वेष रखता था।

दूर से नदी-तट पर एक मुसलमान को आते देख उसके भीतर द्वेष-भावना उत्पन्न हुई। अंतर्यामी संत सब जान गये। वह मुसलमान

स्वामीजी के निकट आया तो उन नम्रता की मूर्ति ने कहा : ''बाबा साँईं ! अस्सलामवालेकुम ।''

मुसलमान ने भी नम्रतापूर्वक कहा : ''वालेकुमअस्सलाम बाबा साँईं !''

उसने कुछ देर स्वामीजी से वार्तालाप किया और फिर चरणस्पर्श करके चला गया । उस मुसलमान द्वारा अपने प्यारे संत को प्रणाम करते देख जेठानंद के मन से द्वेष का भाव काफूर हो गया । उसे आश्चर्य हुआ कि 'स्वामीजी ने कैसे एक पल में मेरी द्वेष-भावना दूर कर दी !' उसका स्वामीजी के प्रति आदर, अहोभाव और भी बढ़ गया ।

आपश्री लौटकर निवास पर आये । जेठानंद को रातवाली बात के कारण मन में पछतावा हो रहा था । अचानक स्वामीजी कहने लगे :

''बेटा ! **यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे ।**''

एक कागज का टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए स्वामीजी बोले : ''इस पर हिन्दुस्तान का नक्शा बनाकर उसमें दिल्ली को दर्शाओ ।''

जेठानंद ने आज्ञानुसार नक्शा बनाकर एक स्थान पर दिल्ली के लिए एक बिंदी अंकित कर दी और बोला : ''यह दिल्ली का निशान है ।''

स्वामीजी बोले : ''जैसे इस बिंदी में चौबीस लाख आबादीवाले शहर (तत्कालीन) की भावना समायी हुई है, वैसे ही सारे ब्रह्माण्ड का रहस्य इस हृदयकमल में समाया हुआ है । अंतःकरण जितना अधिक पवित्र व निर्मल होता जायेगा, उतने ज्यादा रहस्य मालूम होते जायेंगे । स्वच्छ, पवित्र हृदय में ही धीमे-धीमे आवाजें सुनाई देती हैं, प्रकृति के रहस्य सुनाई पड़ते हैं, मगर उन आवाजों को सुनने के लिए दूसरे कान चाहिए । ये बाहर के कान काम नहीं आयेंगे । उनके लिए दुनियावी वृत्ति छोड़कर अंतर्मुखी वृत्ति धारण करनी चाहिए । बेटा ! नींद से उठाने के लिए भीतर घड़ी भी रखी हुई है, वह तीन बजे उठने में सहायता करती है । यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, केवल हृदय को उज्ज्वल करने की आवश्यकता है । फिर तो भीतर अजीब रंग नजर आयेंगे तथा अपने सिवाय दूसरी कोई हस्ती नजर नहीं आयेगी । इस कारण अजीब आनंद प्राप्त होगा । बेटा ! यह एक हकीकत है ।''

अब तो जेठानंद को समझ में आ गया था कि स्वामीजी को उसके मन की बात और तीन बजे रात को भीतर झाँककर देखनेवाली बात की सारी जानकारी है । वह लज्जित होने लगा, पर कुछ कह न सका ।

परम दयालु संत बोले : ''बेटा ! घबराने की जरूरत नहीं है, ऐसा होता है । अभी भी समय गया नहीं है ।''

संतों को समझने के लिए शंका नहीं श्रद्धा की आवश्यकता होती है । सांसारिक व्यक्ति उन्हें अपनी बुद्धि के तराजू में तौलने की कोशिश करता है और थाप खा जाता है । उदारहृदय संतों की यह परम करुणा ही है कि वे उसे सँभाल लेते हैं । शंकालु की शंका मिटा के उसे श्रद्धालु बनाकर श्रद्धा के परम फल आत्मानुभूति तक भी पहुँचा देते हैं । ऐसे परम कृपालु भगवत्पाद प्रातःस्मरणीय साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के चरणकमलों में हमारे अनंत प्रणाम ! ❑

किस पर नाराज, किस पर प्रसन्न होते हैं भगवान ?

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

* गरीब होकर भी जो दानवीर है, उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं ।

* जो धनी है, गुणवान है फिर भी नम्र है, उस पर भगवान प्रसन्न होते हैं ।

* जो बुढ़ापे में भी दुष्कर्म करता है, उस पर भगवान नाराज होते हैं ।

* जो धनवान होकर भी दान-पुण्य नहीं करता, उसकी सम्पत्ति उसको फँसानेवाली होती है, नरकों में ले जानेवाली होती है ।

* विद्वान, बुद्धिमान होने पर भी जो पापकर्म करता है, उस पर भगवान जल्दी नाराज होते हैं । ❑

भगवन्नाम-महिमा

नाम और नामी में अर्थात् भगवन्नाम और भगवान में अभेद है, अतः दोनों के स्मरण का एक ही माहात्म्य है ।

भगवन्नाम तीन तरह से लिया जाता है :

(१) मन से : मन से नाम-स्मरण होता है, जिसका वर्णन भगवान ने **'यो मां स्मरति नित्यशः'** (गीता : ८.१४) इस श्लोक में किया है ।

(२) वाणी से : वाणी से नाम का जप होता है, जिसे भगवान ने **'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि'** (गीता : १०.२५) इस श्लोक में अपना स्वरूप बताया है ।

(३) कण्ठ से : कण्ठ से जोर से उच्चारण करके कीर्तन किया जाता है, जिसका वर्णन भगवान ने **'कीर्तयन्तो'** (गीता : ९.१४) श्लोक में किया है ।

'गीता' में भगवान ने **ॐ, तत्** और **सत्** ये तीन परमात्मा के नाम बताये हैं : **'ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः ।'** (गीता : १७.२३) गीता में भगवान ने ॐकार को अपना स्वरूप बताया है : **'प्रणवः सर्ववेदेषु'** (गीता : ७.८), **गिरामस्म्येकमक्षरम्'** (गीता : १०.२५)। भगवान कहते हैं कि 'जो पुरुष **'ॐ'** इस एक अक्षररूप ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थस्वरूप मुझ निर्गुण ब्रह्म का चिंतन करता हुआ शरीर का त्याग कर जाता है, वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है ।' (गीता : ८.१३) अर्जुन ने भी भगवान के विराट रूप की स्तुति करते हुए नाम की महिमा कही है, जैसे -'हे प्रभो ! कई देवता भयभीत होकर हाथ जोड़े हुए आपके नाम आदि का कीर्तन कर रहे हैं ।' (११.२१) 'हे अंतर्यामी भगवन् ! आपके नाम आदि का कीर्तन करने से यह सम्पूर्ण जगत हर्षित हो रहा है और अनुराग (प्रेम) को प्राप्त हो रहा है । भयभीत होकर राक्षस लोग दसों दिशाओं में भागते हुए जा रहे हैं और सारे सिद्धगण आपको नमस्कार कर रहे हैं ।' (११.३६)

सुषुप्ति (गाढ़ निद्रा) के समय सम्पूर्ण इन्द्रियाँ मन में, मन बुद्धि में, बुद्धि अहं में और अहं अविद्या में लीन हो जाता है । अर्थात् सुषुप्ति में अहंभाव का भान नहीं होता । गाढ़ निद्रा से जागने पर सबसे पहले अहंभाव का भान होता है, फिर देश, काल, अवस्था आदि का भान होता है । परंतु गाढ़ निद्रा में सोये हुए व्यक्ति के नाम से कोई आवाज देता है तो वह जग जाता है अर्थात् अविद्या में लीन हुए, गाढ़ निद्रा में सोये हुए व्यक्ति तक शब्द पहुँच जाता है । इससे यह सिद्ध होता है कि शब्द में अचिंत्य शक्ति है, जिससे वह अविद्या को भेदकर अहं तक पहुँच जाता है । जैसे, अनादिकाल से अविद्या में पड़े हुए मूर्च्छित व्यक्ति की तरह संसार में मोहित हुए मनुष्य को गुरुमुख से भगवन्नाम-श्रवण करने पर अपने स्वरूप का बोध हो जाता है अर्थात् अविद्या में पड़े हुए मनुष्य को भी भगवन्नाम तत्त्वज्ञान करा देता है ।

तत्त्वज्ञ जीवन्मुक्त महापुरुष के मुख से निकली वाणी को अगर कोई आदरपूर्वक सुनता है तो उसके आचरण, भाव सुधर जाते हैं और अज्ञान मिटकर उसे बोध हो जाता है । ऐसे ही जो तत्परता से भगवन्नाम का जप करता है, उसको वह नाम स्वरूप का बोध, भगवान के दर्शन करा देता है ।

भगवान का नाम सभी ले सकते हैं क्योंकि

उसमें कोई विधि-विधान नहीं है। उसको बालक, स्त्री, पुरुष, वृद्ध, रोगी आदि सभी ले सकते हैं और हर समय, हर परिस्थिति में, हर अवस्था में ले सकते हैं।

भ्रम, प्रमाद, लिप्सा और करणापाटव (सुनना कुछ और बोलना कुछ) ये चार दोष वक्ता में रहने से वक्ता के शब्दों से श्रोता को ज्ञान नहीं होता। इन दोषों से रहित शब्द श्रोता को ज्ञान करा देते हैं। भगवान के नाम में इतनी विलक्षण शक्ति है कि कोई भी मनुष्य किसी भी भाव से नाम ले, उसका मंगल ही होता है।

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥

(श्री रामचरित. बा.कां : २७.१)

भगवान का नाम अवहेलना, संकेत, परिहास आदि किसी भी प्रकार से लिया जाय, वह पापों का नाश करता ही है :

सांकेत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव वा।
वैकुण्ठनामग्रहणमशेषाघहरं विदुः॥

(श्रीमद् भागवत : ६.२.१४)

भगवान ने अपने नाम के विषय में स्वयं कहा है कि 'जो जीव श्रद्धा से अथवा अवहेलना से भी मेरा नाम लेते हैं, उनका नाम सदा मेरे हृदय में रहता है।'

आज तक जितनी नाम-महिमा गायी गयी है, उससे नाम-महिमा पूरी नहीं हुई है, प्रत्युत अभी बहुत नाम-महिमा बाकी है। कारण कि भगवान अनंत हैं और उनके नाम की महिमा भी अनंत है।

हरि अनंत हरि कथा अनंता।

(श्री रामचरित. बा.कां : १३९.३)

नाम की पूरी महिमा स्वयं भगवान भी नहीं कह सकते।

रामु न सकहिं नाम गुन गाई।

(श्री रामचरित. बा.कां : २५.४) ❑

महापुरुषों के महान लक्षण

ज्ञानी महापुरुषों के लक्षणों से संबंधित जो श्लोक नीचे दिये गये हैं, उनकी पूर्ति 'गीता' के आधार पर वर्ग पहेली से शब्द ढूँढ़कर करें।

श्रीभगवानुवाच

सम..... ..... समलोष्टाश्मकांचनः।
तुल्यप्रियाप्रियो .....स्तुल्यनिन्दात्म..... ॥
.....योस्तुल्यस्तुल्यो .....पक्षयोः।
सर्वारम्भ..... ..... स उच्यते॥

नी	स	ज	द	च	य	ल	ट	व	ड़	व	सा
या	त	ठ	नू	ध	ए	ण	चां	स	बा	न	ज
न	ज	चि	दुः	औ	तः	ब	ञ	रि	छ	भ	क
ठ	ध	ख	झ	दा	ख	ती	त्रा	छ	र	ह	हं
सो	सु	क	छ	लू	न	मि	णा	त	ऊ	धी	य
खः	य	त	तिः	मा	ग	प	ट	गु	जो	ष	स
क	णी	रा	प	स्तु	घ	खः	दा	झ	स	क	प
स	ऊ	ना	क	फ	सं	थ	मु	क्षा	गी	च	ण
जी	मा	ख	स्थः	ढ	त्म	ट	अ	त्या	य	ह	कृ
झ	त्रा	ब	क	स्व	ङ	थ	रि	फ	क्ष	झ	स
ग	न	ज	री	प्र	तु	प	द	की	जी	ग	रा
व्या	प	व	ग	ग	न	ब	भ	ओ	धि	ड	री

अंक २२६ की पहेलियों के उत्तर

१. प्रकाशं २. प्रवृत्तिं ३. मोह ४. द्वेष्टि ५. निवृत्तानि ६. उदासीन ७. विचाल्यते ८. नेंगते

(श्रीमद् भगवद्गीता : १४.२२-२३)

बताओ तो जानें : १. सत्संग २. ध्यान ३. समता ४. श्रीमद् भगवद्गीता

होवे प्रलय इस विश्व का, मुझको न कुछ भी त्रास है।
ब्रह्मादि सबका नाश हो, मेरा न होता नाश है॥
मैं सत्य हूँ मैं ज्ञान हूँ, मैं ब्रह्मदेव अनंत हूँ।
कैसे भला हो भय मुझे, निर्भय सदा निश्चिंत हूँ॥
आश्चर्य है आश्चर्य है, मैं देहवाला हूँ यदपि।
आता न जाता हूँ कहीं, भूमा अचल हूँ मैं तदपि॥
सुन प्राज्ञ वाणी चित्त दे, निजरूप में अब जाग जा।
भोला! प्रमादी मत बने, भवजेल से उठ भाग जा॥

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'ब्रह्मरामायण' से)

बालक रामदास से बने श्री रामदास काठिया बाबा

लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले की बात है। पंजाब के अमृतसर जिले के लोनाचमारी नामक गाँव में एक परमहंस बाबा रहते थे। चार साल का एक ब्राह्मण बालक रामदास जब भी उधर जाता तो देखता कि गाँव के लोग बाबा को प्रणाम कर रहे हैं, तब उसे बड़ा आश्चर्य होता कि 'आखिर सभी लोग इन बाबा को प्रणाम क्यों करते हैं ? गाँव में और भी लोग हैं, पर किसीको हर कोई प्रणाम नहीं करता। लगता है बाबा बहुत बड़े आदमी हैं !' इस प्रश्न के निराकरण के लिए उसे किसीसे कुछ पूछने का साहस नहीं होता था। उसने सोचा कि 'सबसे सरल उपाय है, बाबाजी से ही पूछ लूँ।'

एक दिन उसने पूछ ही लिया : ''बाबा ! आपको इतना बड़ा बनानेवाली कौन-सी चीज है, जिस कारण हररोज चारों ओर से इतने नर-नारी आ-आकर भक्तिपूर्वक आपके चरणों में प्रणाम करते हैं ?''

''बेटा ! मैं हमेशा 'राम-राम' जपता हूँ। रामनाम ने ही मुझको इतना बड़ा बनाया है।''

''मैं रामनाम लूँ तो क्या मैं भी इतना बड़ा बन सकता हूँ ?''

''हाँ बेटा ! रामनाम लोगे तो तुम भी इतने ही बड़े हो जाओगे।''

बाल-मन में यह बात घर कर गयी। तब से वह मन-ही-मन रामनाम का जप करने लगा। यही बालक आगे चलकर प्रसिद्ध महात्मा रामदास काठिया बाबा हुए।

बालक का यथासमय उपनयन-संस्कार (जनेऊ) हुआ और फिर उसे पढ़ने के लिए दूसरे गाँव में गुरु के यहाँ भेज दिया गया। तीक्ष्णबुद्धि बालक बहुत थोड़े समय में पाठ याद कर लेता, फिर एकांत में बैठकर रामनाम का जप किया करता।

एक दिन छात्रों ने गुरुजी से शिकायत कर दी कि 'रामदास पढ़ाई नहीं करता है। जब देखो तब माला ही फेरता रहता है।' गुरुजी ने रामदास को बुलाकर पूछा : ''क्यों रे ! यहाँ माला फेरने आता है कि पढ़ने आता है ?''

रामदास ने कहा : ''गुरुजी ! मैं अपना पाठ बराबर पढ़ता हूँ, आज्ञा हो तो सुनाऊँ ?''

पुस्तक मँगवाकर गुरुजी ने प्रश्न पूछा। रामदास ने ठीक उत्तर दिया। शिकायत करनेवाले छात्रों को डाँटते हुए गुरुजी ने कहा : ''रामदास अगर अपना पाठ याद करके माला फेरता है तो तुम लोग क्यों चिढ़ते हो ?''

इस घटना के बाद फिर किसीको कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। शिक्षा समाप्त होने पर रामदास घर लौट आये। कुछ दिन बाद वे गायत्री मंत्र सिद्ध करने के लिए विधिपूर्वक जप करने लगे। एक लाख मंत्रजप हो जाने पर एक दिन देवी ने आकाशमण्डल में प्रकट होकर आदेश दिया : ''वत्स ! शेष जप तुम ज्वालामुखी में जाकर पूरा करो और वर ग्रहण करो।''

रामदास ने कहा : ''माँ ! संतान पर तुम्हारी कृपा प्रतिक्षण बनी रहे, यही प्रार्थना है।'' देवी 'तथास्तु' कहकर अंतर्धान हो गयी।

इस घटना के बाद ज्वालामुखी जाते समय रास्ते में एक दिव्यकांति ज्योतिर्मय पुरुष मिले। रामदास ने कहा : ''महाराज ! मुझे अपनी सेवा में रख लीजिये। मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ।''

साधु ने कहा : ''वत्स ! यह कठिन मार्ग है। शिष्य बन जाना सरल है पर साधना और त्याग दुरूह होता है। कुछ दिन ठहरकर देख लो।'' रामदास का श्रम, लगन और निष्ठा देखकर साधु ने उन्हें अपना शिष्य बना लिया। (क्रमशः) ❑

संत वाणी

सतगुर सबद उलंघिकरि, जिनि कोई सिख जाइ ।
दादू पग-पग काल है, जहाँ जाइ तहँ खाइ ॥

दादू मन फकीर ऐसैं भया, सतगुर के परसाद ।
जहाँ का था लागा तहाँ, छूटे बाद-बिबाद ॥

ना घरि रह्या न बनि गया, ना कुछ किया कलेस ।
दादू मन हीं मन मिल्या, सतगुर के उपदेस ॥
– संत दादू दयालजी

रज्जब को अज्जब[1] मिल्या, गुरु दादू दातार[2] ।
दुख दरिद्र तब का गया, सुख संपत्ति अपार ॥

गुरु दादू का हाथ सिर, हृदये त्रिभुवन-नाथ ।
रज्जब डरिये कौन सूँ, मिलिया साईं साथ ॥

सद्गुरु के शब्दों सुन्यो, बहुत होय उपकार ।
जन रज्जब जगपति मिले, छूटे सकल विकार ॥
– संत रज्जबजी

गुरु सूँ कछु न दुराइये, गुरु सूँ झूठ न बोल ।
बुरी भली खोटी खरी, गुरु आगे सब खोल ॥

चिउँटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसों ना ठहराय ।
सहजो कूँ वा देस में, सतगुरु दई बसाय ॥

सहजो सिष ऐसा भला, जैसे माटी मोय ।
आपा सौंपि कुम्हार कूँ, जो कछु होय सो होय ॥
– संत सहजोबाई

काल के माथै पाँव दे, सतगुरु के उपदेस ।
साहिब अंक पसारिया, लै चला अपने देश ॥
– संत कबीरजी

पढ़ पढ़ पण्डित ह्वै, सकल शास्त्र ले जाण ।
पण खुद ने जाणे नहीं, उण सो कुण अणजाण ॥
– संत भूरीबाई

१. अजब, अलौकिक २. दाता

सद्गुरु-महिमा

गुरुदर्शन फल दुर्लभ साधो !
गुरुवर में कर हरि-दीदार ।
गुरु ही भक्ति मुक्ति के दाता,
प्रभु हैं बने सद्गुरु साकार ॥

गुरु ही मात-पिता व बंधुजन,
गुरु परमेश्वर हैं जीवनधन ।
अमीदृष्टि करुणा बरसाते,
सद्गुरु सुहृद हैं सर्वाधार ॥

गुरुवर की पावन छवि है न्यारी,
सत्यं शिवं वो मदन मुरारी ।
सद्गुरु हैं दिल दीप जगाते,
वो ही दीनबंधु दातार ॥

गुरु अविनाशी अलख निरंजन,
राशि परम सुख हैं दुःखभंजन ।
गुरुतत्त्व कण-कण मदमाता,
सद्गुरु रक्षक करुणागार ॥

सद्गुरु भय, भ्रम, भेद मिटायें,
रामनाम से मन को रँगायें ।
घट-घट में हैं वही सुहाते,
नूरे नजर वो ही करतार ॥

पारस स्वर्ण करे जग जाना,
सद्गुरु तो करें आप समाना ।
जन्म-कर्म बंधन से छुड़ाते,
वो ही आत्मस्वरूप सुखसार ॥

सद्गुरु 'साक्षी' सिरजनहारे,
भवनिधि से वही तारणहारे ।
अंतर आनंदरस छलकाते,
छा जाये निज आत्मखुमार ॥
– जानकी चंदनानी 'साक्षी'

जो मोक्ष है तू चाहता, विष सम विषय तज तात रे !

(पूज्य बापूजी की मोक्षप्रद अमृतवाणी)

जिनको संसार का आकर्षण है उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती है, फिर भी बार-बार जन्मना-मरना व पीड़ा-दुःख सहना मिटता नहीं है। लेकिन जिनका आचरण शुद्ध है, वे शुद्ध भगवद्भक्ति का प्रसाद पाकर आनंदमयी माँ की तरह आत्मसुख का खजाना खोज लेते हैं। धनभागी हैं एकनाथ जैसे सत्शिष्य जो सदाचार से गुरुसेवा, गुरुआज्ञा-पालन एवं गुरुकृपा की प्राप्ति में तल्लीन रहते थे ! अभागे आदमी को भक्ति का रंग नहीं लग सकता और पापी, पातकी को भक्ति में रुचि नहीं होती। यदि भक्ति में रुचि हो तो पापी व पातकी आदमी भी तर सकते हैं। जिनका आचार-विचार शुद्ध है उनको भक्ति में रुचि होती है, मौन व सदाचार में रुचि होती है। संसार का आकर्षण उन्हें प्रभावित नहीं कर सकता, जबकि अभागे लोग संसारी आकर्षण में बरबाद हो जाते हैं। नश्वर देह व नश्वर आकर्षण में अपनी जिंदगी का जो नाश करते हैं, उन्हें पशुयोनि में भी पीड़ा सहनी पडती है। जो भगवद्भक्ति का सहारा लेते हैं, अपने अंतरात्मा-परमात्मा को साक्षी समझकर जो सत्यस्वरूप ईश्वर को पाने के लिए सदाचरण करते हैं, वे सदाचारी-संयमी पुरुष सुखस्वरूप परमात्मा में प्रवेश पा लेते हैं।

अनात्म-वस्तु में अहं-प्रत्यय करने से जीव दुःखी होता है। यदि वह आत्म-वस्तु में, आत्मचेतना में प्रीति करे, अहं-प्रत्यय करे तो दुःख दूर हो जाता है। जिसको संसार के पदार्थ आकर्षित नहीं करते, वह अंतरात्मा को, अंतर्सुख को पा लेता है। संसार के पदार्थ विवेक के अभाव में आकर्षित करते हैं। विवेक हो तो जगत के पदार्थों में कोई आकर्षण नहीं होता। जिनकी बुद्धि शुद्ध है और जिनका आचरण पवित्र है, उनको आत्मा-परमात्मा का ही आकर्षण होता है। जगत की रुचि टिक नहीं सकती और परमात्मा की रुचि मिट नहीं सकती। जगत की किसी भी वस्तु में रुचि करो, टिकेगी नहीं। धन ज्यादा मिल जाय तो क्या होगा ? अरुचि हो जायेगी, चिंता-तनाव हो जायेगा। भोजन में रुचि है लेकिन नहीं मिला तब तक। मिल गया और ज्यों-ज्यों खाते गये, रुचि मिटती गयी। दो ग्रास अधिक खाया तो रुचि खत्म।

एक महात्मा थे जो भिक्षा माँगकर रूखा-सूखा ही खाते थे। एक दिन उनके मन में आया कि खीर खावें। वे जहाँ से भिक्षा लाते थे उस आदमी का हलवाई का धंधा था। महात्मा ने उससे कहा : ''भाई ! कल हम खीर खायेंगे।''

हलवाई बड़ा खुश हुआ कि महाराज हमेशा मेरे घर की रूखी-सूखी रोटी ही लेते हैं। कभी हलवा देता हूँ तो वापस कर देते हैं, दूध भी नहीं लेते और आज स्वयं खीर बनाने के लिए कह रहे हैं। उसने दूसरे दिन गाय के दूध में पिस्ता-बादाम डालकर खूब घोंटकर खीर बनायी। महात्मा जब लेने आये तो उनके खप्पर में ठंडी करके डाल दी। महात्मा खीर लेकर अपनी कुटिया में पहुँचे और मन को कहा : 'ले ! खीर की रुचि है, खीर का आकर्षण है, अभागे ! जो थोड़ी देर के बाद विष्ठा बन जायेगी उसीका आकर्षण है ! हाड़-मांस के शरीर का आकर्षण, खीर का आकर्षण, धन-दौलत का आकर्षण... ! भगवान का आकर्षण नहीं है, भगवान में रुचि नहीं है तभी ये आकर्षण हैं। हे मन ! तू बेईमान है। तुझे भगवान में रुचि नहीं है, जप-तप

में रुचि नहीं है, पवित्रता में रुचि नहीं है, शाश्वत का आकर्षण नहीं है।' उन्होंने अपना कान पकड़कर गाल पर थप्पड़ मारा और कहा : 'ले, खा...'

फिर भी मन ने सोचा, 'इतनी महँगी खीर है, बहुत दिनों से सोचा था, थोड़ी खा लेता हूँ।' खीर कटोरी में डाली और पी। जो रुचि थी उस पर थोड़ी रोक लगी। दूसरी कटोरी पी तो रुचि घटी। तीसरी कटोरी पी। ऐसा करते-करते खप्पर में जितनी खीर थी सब ठाँस-ठाँसकर पीने लगे। 'ओऽऽ ओऽऽ...' हुआ, फिर भी मन को बोले : 'नहीं, ले-ले, पी-पी, ले, मजा ले ले...' और ठाँस-ठाँसकर पी तो जितनी थी, सब वमन द्वारा बाहर आ गयी। खप्पर में माल वापस आ गया। वे मन को कहते हैं : 'ले ! इन पदार्थों में रुचि कर, इनमें आकर्षण कर !' फिर खप्पर में जो आया था उसे फिर से पिया तो जो बाकी बचा था वह भी 'हूऽऽ... आऽऽ...' करके बाहर आ गया। फिर तो मन साकार होकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया कि 'गुरुजी ! अब ईश्वर के सिवाय कभी भी कहीं भी रुचि नहीं करूँगा, आकर्षित नहीं होऊँगा।'

मन को सजा के बिना सच्चा मजा भी नहीं मिलता है। बुद्धिमान को इशारा करो तो समझ जाय लेकिन दुष्ट मन को जब तक सजा नहीं मिलती तब तक उसका आकर्षण नहीं छूटता। इसलिए या तो अपने-आप हिम्मत करके मन का आकर्षण छुड़ावें या भक्ति का रंग लगाकर छुड़ावें। ज्यों-ज्यों आकर्षण छूटेगा त्यों-त्यों भगवान का रंग लगेगा। बढ़िया भोजन में आकर्षण, खीर-पकौड़ों में आकर्षण... यह सब कुछ इष्ट नहीं है। यदि तुमने जीवन जीने का ढंग ही नहीं जाना तो कुछ भी नहीं जाना।

(1) संसार का आकर्षणमात्र साधक के विनाश का कारण है। जिसे भविष्य में दुःखी होना हो वह संसार का आकर्षण करे। जिसका भविष्य अंधकारमय करना हो उसे शराब का चस्का लगा दो, बस हो गया पतन शुरू। संत तुलसीदासजी कहते हैं :

जानिअ तबहिं जीव जग जागा।
जब सब बिषय बिलास बिरागा॥

(श्री रामचरित. अयो.कां. : ९२.२)

जीव कब जगा ? सम्पूर्ण भोग-विलासों से वैराग्य होकर भगवान में, अंतरात्मा के सुख में रुचि हो तब। यदि विषय-विलास, छल-कपट व संसार के आकर्षणों से वैराग्य न होकर उनमें रुचि ही बनी रही तो वह आदमी ईश्वर के रास्ते चलने के लायक नहीं है, नालायक है। उसे अधम पशुयोनियों की यात्रा करते हुए डंडे खाने ही पड़ेंगे। अपने मन को ऐसा समझाकर भी मनुष्य-जीवन का लाभ उठाना चाहिए। ऐसा कोई शरीर नहीं जो मरनेवाला न हो। ऐसा कोई भोग नहीं जो दुःख देनेवाला न हो। ऐसा कोई लोक नहीं जहाँ से हटना न हो। किसी भी लोक में जाओ, वहाँ से हटना ही पड़ता है। कोई भी वस्तु मिलेगी, उसे छोड़ना ही पड़ता है। कोई भोग भोगा तो हमें क्षीण होना ही पड़ता है लेकिन यदि भगवद्वस्तु, भगवद्ज्ञान मिल गया तो न वह छूटता है, न टूटता है।

(2) यह मरनेवाला शरीर छूटकर नष्ट हो जाय उसके पहले भीतर-ही-भीतर गोता मारकर तुम अमर आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर लो तो कितना अच्छा होगा ! लोक और परलोक की यात्रा में भटकना पड़े उसकी अपेक्षा आत्मलोक, परमात्मलोक में स्थिति प्राप्त कर लोगे तो कितना अच्छा होगा ! नश्वर संसार की वस्तुओं और शरीर को सजाते-सँभालते प्राण निकलें उसके बजाय आत्मधन को प्राप्त कर लोगे तो कितना अच्छा होगा ! विषय-विकारों में अपना जीवन बरबाद हो, इससे तो हरिरस की प्यालियाँ पीते-पीते अपना जीवन आबाद कर लोगे तो कितना अच्छा होगा ! उठो... कब तक सोते रहोगे ? जिंदगी के दिन यूँ ही बीते जा रहे हैं भैया ! अपना काम बनाकर जन्म-मरण से मुक्त हो जाओ बस। ❑

मोक्षा (मोक्षदा) एकादशी

(६ दिसम्बर)

युधिष्ठिर बोले : देवदेवेश्वर ! मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में कौन-सी एकादशी होती है ? उसकी विधि क्या है तथा उसमें किस देवता का पूजन किया जाता है ? स्वामिन् ! यह सब यथार्थ रूप से बताइये ।

श्रीकृष्ण ने कहा : नृपश्रेष्ठ ! मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का वर्णन करूँगा, जिसके श्रवणमात्र से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है । उसका नाम 'मोक्षा (मोक्षदा) एकादशी' है, जो सब पापों का अपहरण करनेवाली है । राजन् ! उस दिन यत्नपूर्वक तुलसी की मंजरी तथा धूप-दीपादि से भगवान दामोदर का पूजन करना चाहिए । पूर्वोक्त विधि से ही दशमी और एकादशी के नियम का पालन करना उचित है । 'मोक्षदा एकादशी' बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाली है । उस रात्रि में मेरी प्रसन्नता के लिए नृत्य, गीत और स्तुति के द्वारा जागरण करना चाहिए । जिसके पितर पापवश नीच योनि में पड़े हों, वे इस एकादशी का व्रत करके इसका पुण्यदान अपने पितरों को करें तो पितर मोक्ष को प्राप्त होते हैं । इसमें तनिक भी संदेह नहीं है ।

पूर्वकाल की बात है, वैष्णवों से विभूषित परम रमणीय चम्पक नगर में वैखानस नामक राजा रहते थे । वे अपनी प्रजा का पुत्र की भाँति पालन करते थे । इस प्रकार राज्य करते हुए राजा ने एक रात को स्वप्न में अपने पितरों को नीच योनि में पड़े हुए देखा । उन सबको इस अवस्था में देखकर राजा के मन में बड़ा विस्मय हुआ और प्रातःकाल ब्राह्मणों से उन्होंने उस स्वप्न का सारा हाल कह सुनाया ।

राजा बोले : ''ब्राह्मणो ! मैंने अपने पितरों को नरक में गिरे हुए देखा है । वे बारम्बार रोते हुए मुझसे यों कह रहे थे कि 'तुम हमारे तनुज हो, इसलिए इस नरक-समुद्र से हम लोगों का उद्धार करो ।' द्विजवरो ! इस रूप में मुझे पितरों के दर्शन हुए हैं इससे मुझे चैन नहीं मिलता । क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? मेरा हृदय रूँधा जा रहा है । द्विजोत्तमो ! वह व्रत, वह तप और वह योग, जिससे मेरे पूर्वज तत्काल नरक से छुटकारा पा जायें, बताने की कृपा करें । मुझ बलवान तथा साहसी पुत्र के जीते-जी मेरे माता-पिता घोर नरक में पड़े हुए हैं । अतः ऐसे पुत्र से क्या लाभ है !''

ब्राह्मण बोले : ''राजन् ! यहाँ से निकट ही पर्वत मुनि का महान आश्रम है । वे भूत और भविष्य के भी ज्ञाता हैं । नृपश्रेष्ठ ! आप उन्हींके पास चले जाइये ।''

ब्राह्मणों की बात सुनकर महाराज वैखानस शीघ्र ही पर्वत मुनि के आश्रम पर गये और वहाँ उन मुनिश्रेष्ठ को देखकर उन्होंने दण्डवत् प्रणाम करके मुनि के चरणों का स्पर्श किया । मुनि ने भी राजा से राज्य के सातों अंगों (राजा, मंत्री, राष्ट्र, किला, खजाना, सेना और मित्रवर्ग) की कुशलता पूछी ।

राजा बोले : ''स्वामिन् ! आपकी कृपा से मेरे राज्य के सातों अंग सकुशल हैं किंतु मैंने स्वप्न में देखा है कि मेरे पितर नरक में पड़े हैं । अतः बताइये कि किस पुण्य के प्रभाव से उनका वहाँ से छुटकारा होगा ?''

राजा की यह बात सुनकर मुनिश्रेष्ठ पर्वत एक मुहूर्त तक ध्यानस्थ रहे । इसके बाद वे राजा से बोले : ''महाराज ! मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में

जो 'मोक्षा' (मोक्षदा) नाम की एकादशी होती है, तुम सब लोग उसका व्रत करो और उसका पुण्य पितरों को दे डालो। उस पुण्य के प्रभाव से उनका नरक से उद्धार हो जायेगा।''

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : युधिष्ठिर ! जब उत्तम मार्गशीर्ष मास आया, तब राजा वैखानस ने मुनि के कथनानुसार 'मोक्षदा एकादशी' का व्रत करके उसका पुण्य पितासहित समस्त पितरों को दे दिया। पुण्य देते ही क्षण भर में आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। वैखानस के पिता पितरोंसहित नरक से छुटकारा पा गये और आकाश में आकर राजा के प्रति यह पवित्र वचन बोले : 'बेटा ! तुम्हारा कल्याण हो।' यह कहकर वे स्वर्ग में चले गये।

राजन् ! जो इस प्रकार कल्याणमयी 'मोक्षा एकादशी' का व्रत करता है, उसके पाप नष्ट हो जाते हैं और मरने के बाद वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। यह मोक्ष देनेवाली 'मोक्षदा एकादशी' मनुष्यों के लिए चिंतामणि के समान समस्त कामनाओं को पूर्ण करनेवाली है। इस माहात्म्य के पढ़ने और सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। **(पद्म पुराण, उत्तर खंड)** ❑

कितना करुणामय हाथ है भगवान का !

कभी-कभी विपदा भी बड़ी सम्पदा का द्वार खोल देती है। आप सावधान रहना, कभी कष्ट आ जाय तो देख लेना कि कष्ट के पीछे उसका कितना करुणामय हाथ है ! कष्ट है तो फिर एकांत में रहिये, ईश्वर के प्यारों का जो सत्संग है, उसका मनन करिये, कष्ट आपके लिए बड़ा तोहफा हो जायेगा, बड़ी प्रसादी हो जायेगा। कष्ट आये तो घबराइये नहीं, कष्ट देनेवाले पर क्रुद्ध होइये नहीं। कष्ट आये तो विवेक करके संसार की आसक्ति को, वासना को मिटाने का रास्ता खोजिये।

- पूज्य बापूजी

पहेलियाँ

(१)

दुनिया के सब रिश्ते झूठे।
कौन-सा नाता कभी न टूटे ?

(२)

रणभूमि में मिला उपदेश।
दिव्य ज्ञान का क्या संदेश ?

(३)

तीन गुणों से है वो अतीत,
करता सबको सच्ची प्रीत।

(४)

संत की लीलाओं का है वर्णन,
पाठ से होते सिद्ध सब काम।
इस युग की उस रामायण का,
बताओ क्या है पूरा नाम ?

(५)

गुरुजन, मात-पिता को करने से प्रणाम।
बढ़ते हैं गुण चार, बताओ क्या हैं उनके नाम ?

उपयोगी मुद्रा

लिंग मुद्रा

लाभ : शरीर में उष्णता बढ़ती है, खाँसी मिटती है और कफ का नाश होता है।

विधि : दोनों हाथों की उँगलियाँ परस्पर भींचकर अंदर की ओर रहे हुए अँगूठे को ऊपर की ओर सीधा खड़ा रखो।

(आश्रम से प्रकाशित 'जीवन विकास' पुस्तक से क्रमशः)

शक्ति का दुरुपयोग, कर देता उससे वियोग

(पूज्य बापूजी की सत्संग-सरिता से)

एक मुसलमान लड़के को कोई साधु-संन्यासी मिले, बोले : ''बेटा ! पानी पिला दे ।''

लड़का बोला : ''बाबा ! मैं मुसलमान हूँ, क्या आप जानते हैं ? आप बड़े उच्चकोटि के संत-संन्यासी और मुसलमान के हाथ का पानी पियेंगे ?''

बोले : ''बेटा ! मुझे प्यास लगी है, कौन हिन्दू, कौन मुसलमान ! कौन अपने, कौन पराये ! सबमें एक ईश्वर है । जा, पानी ला ।''

लोटा साफ करके पानी पिला दिया । साधु उस पर खुश हो गये । बोले : ''देख, तेरी श्रद्धा-नम्रता पर मैं बड़ा खुश हूँ । मैं तुमको एक मंत्र और एक सिद्धि का उपाय बताता हूँ, जिससे तुम एक अजगैबी लोक के मालिक हो जाओगे । तुम जो चाहोगे वह वस्तु आ जायेगी, जो चाहोगे वह चीज चली जायेगी । लेकिन तुम्हारे पिछले जन्मों के सत्कर्मों को भी मैं देख रहा हूँ और बुरी आदतों को भी देख रहा हूँ । बुरी आदत से, स्वार्थ से बचना । शक्ति मिले तो उसका सही उपयोग करना ।''

मंत्रदीक्षा दी और कोई युक्ति सिखा दी । वह तो ऐसा लगा, ऐसा लगा कि बीस साल तक उस मंत्रसिद्धि में लगा रहा और उस लोक की शक्तियों का मालिक हो गया । यह बात परमहंस योगानंद के गुरु युक्तेश्वर गिरिजी ने योगानंदजी को बतायी थी कि हमारे देखने में एक ऐसा फकीर आया । उसको हम देखने जाते थे । उसका नाम था अफजल खान ।

वह जिस वस्तु को छूता वह अदृश्य हो जाती और जो वस्तु मँगाता वह हाजिर हो जाती । जो चीज चाहे वह मँगा के दिखा दे, खिला दे, पिला दे । अफजल खान एक चमत्कारी फकीर के नाम से प्रसिद्ध हो गया । लेकिन उसकी गंदी आदतों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा, क्योंकि ईश्वरप्रीति के लिए मंत्र नहीं था । रावण के पास शक्तियाँ थीं लेकिन ईश्वरप्रीति न थी तो रावण फिसला । शबरी में ईश्वरप्रीति जगा दी गुरु ने । इसलिए मैं ध्यान देता हूँ कि आपके जीवन में फिसलाहट न आये । ईश्वर में प्रीति कर दो बस । नहीं तो शक्तियाँ कैसे जगती हैं, मुझे पता है । मैं आपको वह नहीं बताता हूँ । उसके बाद पतन का खतरा बढ़ जाता है । ईश्वर की प्रसन्नता के लिए सत्कर्म करो तो आनंदस्वरूप ईश्वर अंदर में जगमगायेगा ।

अफजल कोलकाता के बाजार में हीरे-जवाहरात की बड़ी-बड़ी दुकानों में खरीददारी के बहाने जाता । दुकानदार हीरे, जवाहरात, मोती दिखाते । वह देखता और 'पसंद नहीं आया' - ऐसा कहकर बस दुकान से नीचे उतरता और वह चीज वहाँ से गायब ! जिस-जिस रत्न को वह छू लेता, वे सारी चीजें अफजल के पास पहुँच जातीं ।

जब कोई प्रसिद्ध होता है तो उसके सेवक भी हो जाते हैं, कई चमचे हो जाते हैं । बापू के तो शिष्य होते हैं लेकिन अफजल के तो चमचे होंगे । अफजल कभी-कभी यात्रा में उन्हें अपने साथ ले जाता । वह रेलवे स्टेशन पर टिकट की खिड़की पर किसी बहाने टिकट के बंडल को छू लेता ।

फिर बोलता : ''हमें टिकटें नहीं चाहिए।''

चमचों को बोलता : ''चलो, ट्रेन में बैठो।'' वह टिकट का बंडल वहाँ से गायब हो जाता। अफजल सबको टिकटें पकड़ा देता। अब उस बेचारे टिकटवाले की तो एक महीने की पगार ही कट गयी।

एक बार युक्तेश्वर गिरि के एक मित्र ने उसे अपने लगभग २० मित्रों के साथ घर पर बुलाया। उनमें युक्तेश्वर गिरि भी थे। उनसे अफजल ने कहा : ''नीचे बगीचे में से कोई पत्थर उठा के ले आओ और उस पर अपना नाम लिख दो। फिर उसे गंगा में जितनी दूर फेंक सकते हो फेंक दो।'' उन्होंने ऐसा ही किया। फिर अफजल ने कहा : ''जाओ, इस घर के साथ-साथ बहनेवाले गंगा के पानी को एक बर्तन में भर लाओ।'' युक्तेश्वरजी बर्तन में गंगाजल भरकर लाये तो अफजल ने कहा : ''हजरत ! फेंका हुआ पत्थर ला दो।'' और उनके हाथ का नाम लिखा वह पत्थर पानी में प्रकट हो गया !

''यही था आपका पत्थर ?''

बोले : ''हाँ।''

वहाँ युक्तेश्वर गिरि का एक मित्र भी था, बाबू। उसने सोने की पुरानी घड़ी और चेन पहन रखी थी। उसको बोला : ''ला देखें तेरी घड़ी और चेन।'' हाथ में लेते ही दोनों अदृश्य ! बाबू ऊँचा-नीचा हो गया। रुआँसा होकर बोला : ''अफजल ! कृपया मेरी घड़ी और चेन लौटा दो। वे मेरी अनमोल पारम्परिक सम्पत्ति हैं।''

''जा तेरे घर की तिजोरी में ५०० रुपये पड़े हैं, उन्हें मेरे पास ले आ फिर बताऊँगा कि घड़ी कहाँ मिलेगी।'' बाबू तुरंत घर गया और ५०० रुपये लाकर उसे दे दिये। ५०० रुपये हजम !

''जा, तेरे घर के पास की छोटी पुलिया पर तेरी चेन और घड़ी मिल जायेगी।''

बाबू तीर की तरह दौड़ा। जब वापस आया तो उसके चेहरे पर मुस्कान थी, पर दोनों वस्तुओं को इस बार तिजोरी में रखकर आया था।

घड़ी व चेन के बदले धन जाने से बाबू के मित्र अफजल को तिरस्कार की नजर से घूर रहे थे। उन्हें शांत करने के लिए अफजल ने कहा : ''आप लोगों को जो कुछ पीना हो उसका केवल नाम बोलिये।''

किसीने कहा : ''दूध चाहिए।''

किसीने कहा : ''फलों का रस चाहिए।''

बाबू ने कहा : ''व्हिस्की चाहिए।''

देखते-ही-देखते तुरंत सीलबंद बोतलें आ गयीं। सबको अपनी पसंद का पेय मिला।

बाबू बोला : ''मेरे इतने पैसे गये, मैं तो चिल्लाऊँगा।''

अफजल : ''तू और कुछ माँग ले।''

बाबू : ''हम सबको बढ़िया भोजन खिलाओ, सोने की थाली में। तब हम मानेंगे।''

''क्या खाओगे ?''

''पूरा राजसी भोजन चाहिए।''

थालियों की खनखनाहट की आवाज आयी। सोने की थालियाँ बिछ गयीं। व्यंजन परोसे गये। जो भी २०-२२ लोग थे, सबने भोजन कर लिया। पेट भी भरा, स्वाद भी आया। परमहंस योगानंद के गुरु बताते हैं कि फिर सभी लोग आराम करने के लिए बाहर जाने लगे तो पीछे मुड़कर देखा कि थालियों की बड़े जोर की खनखनाहट हो रही है, मानो कोई उन्हें एकत्र कर रहा हो। देखते-ही-देखते वे अदृश्य हो गयीं। परमहंस योगानंद ने हँसते हुए पूछा : ''गुरुजी ! जो सोने की थालियाँ पैदा करके भोजन करा सकता है, वह ५०० रुपये के लिए क्यों धोखा करेगा ?''

''अफजल आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत उन्नत नहीं था। उसे गंदी आदत थी। गुरु की दी

हुई जो शक्ति थी, उस सिद्धि के बल से वातावरण में से वस्तु-अनुरूप-कण इकट्ठे होकर वे चीजें बन जाती थीं लेकिन ज्यादा देर टिक नहीं सकती थीं । जिनको ऐहिक परिश्रम से बनाया, कमाया जाता है वे रहती हैं, बाकी सिद्धियों के बल से बनी हुई चीजें अस्थायी होती हैं । खान-पान की तो ठीक हैं, बाकी सब अदृश्य हो जाती हैं ।''

कुछ वर्षों बाद युक्तेश्वर गिरि के पास बाबू ने आकर समाचार-पत्र दिखाया और कहा : ''यह लेख पढ़ो, जिसमें अफजल ने अपनी गलतियों को स्वीकार किया है ।''

उसमें लिखा था कि मैं एक समय बाजार से जा रहा था तो किसी कराहते हुए वृद्ध ने कहा : 'अफजल फकीर ! मेरा लँगड़ापन ठीक कर दो ।' मैंने उसकी ओर देखा और कहा : 'तेरे हाथ में यह सोना !' मैंने उसे स्पर्श किया और आगे बढ़ गया । देखते-देखते वह सोना मैंने अपनी विद्या के बल से गायब कर दिया ।

उसने कहा : 'सोना तो छीन लिया, मेरे पैर तो ठीक करो ! ओ अफजल ! तुम बड़े चमत्कारी फकीर हो । अफजल ! अफजल फकीर !! अल्लाह के नाम पर मेरे पैर तो ठीक करो !'

मैंने सुना-अनसुना कर दिया । जब मैंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया, तब वह बुलंद आवाज में अधिकारपूर्वक कहने लगा : 'अफजल ! क्या तूने मुझे नहीं पहचाना ? यह तू क्या करता है ?'

देखते-देखते वह लँगड़ाता हुआ बूढ़ा जवान हो गया ! मैं दंग रह गया कि जिस संन्यासी ने मुझे दीक्षा दी थी, जो तीसों साल पहले मुझे मिले थे, लँगड़े के रूप में ये वही महापुरुष हैं !

मेरे गुरु की आँखों से अँगारे बरस रहे थे । बोले : 'मैं स्वयं अपनी आँखों से देख रहा हूँ कि तुम अपनी शक्तियों का उपयोग दुःखी-पीड़ित मानव-जाति की सहायता के लिए नहीं बल्कि एक घटिया चोर की तरह उसे लूटने में करते हो । मैं तुम्हारी सारी शक्तियाँ वापस लेता हूँ । गरीब-गुरबों की सेवा के लिए दी हुई शक्तियों का दुरुपयोग कर रहा है ! जा, मैं उन्हें लिये जाता हूँ ।'

फिर मैंने अपनी शक्ति को पुकारा या करने को कहा तो कुछ नहीं हुआ । मेरी आँखों में आश्चर्य, मन में पश्चात्ताप की आग और अतीत की स्मृतियाँ रहीं । मैं चरणों पर गिर पड़ा और बोला : 'मैं सोचता था मुझमें कोई ऐब नहीं है । बिना मेहनत के मिली हुई ऋद्धि-सिद्धियों का मैंने दुरुपयोग किया । आपने कहा था कि 'तेरे में मलिन ख्वाहिशें हैं किंतु शक्तियों को अच्छे काम में लगाना । उन्हें परोपकार में लगाने से ईश्वर का प्रेम मिलता है, इश्क-नूरानी, इश्क-मिजाजी, इश्क-इलाही...' लेकिन मैंने इश्क रुपये-पैसों और वाहवाही से किया । मालिक ! मुझे बख्शो ।' तब उन संन्यासी को दया आयी । दयालु संन्यासी ने कहा :

'अफजल ! अब ये ठगी के धंधे तो गये क्योंकि तेरे से शक्ति मैं लिये जाता हूँ । जब भी तुझे भोजन और वस्त्र आदि की जरूरत पड़ेगी तो तुझे मिल जाया करेंगे । अब हिमालय के एकांतवास में रहकर भजन करो ।'

मैंने कहा : 'मालिक ! अब वही करूँगा ।'

ईश्वर के प्रेम के सिवाय, आत्मसुख के सिवाय सब व्यर्थ है । किसीसे छीनाझपटी करो या कमाकर भी संसार के भोग भोगो, अंत में विनाश है लेकिन प्रेमस्वरूप परमात्मा को पाओ तो प्रेम बढ़ता जाता है, ज्ञान बढ़ता जाता है, रस बढ़ता जाता है । नीरस जीव रसवान प्रभु की कोटि में आ जाता है ।

युक्तेश्वर गिरि का सत्संग सुनकर योगानंद भी बड़े समर्थ संत हो गये । ❑

एक अनोखी, अलौकिक दिवाली

अक्टूबर महीने में सभी लोग दिवाली के त्यौहार की तैयारी में व्यस्त थे। तब हमारी 'लोक-कल्याण पत्रकार संघ' की एक टीम राजस्थान-गुजरात सरहद पर सिरोही तथा उदयपुर जिले के कोटड़ा, गोगुन्दा जैसे छोटे व पिछड़े इलाकों के लोगों से मिल रही थी। यहाँ पर हमने जो देखा उनमें से एक सुखद आश्चर्य देनेवाली घटना थी पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के द्वारा दीपावली उत्सव मनाने का एक अनोखा अंदाज, जो हमारे दिलों में बापूजी की एक अलग ही छवि प्रस्तुत कर रहा था।

पिछले २-३ सालों से गुजरात के प्रिंट मीडिया तथा देश के इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया की सतत नकारात्मक पत्रकारिता के शिकार बने संत श्री आशारामजी बापू के द्वारा पिछले २८-३० वर्षों से इन पिछड़े इलाकों में गरीब-आदिवासियों के साथ दीपावली मनाना हमारे लिए सुखद आश्चर्य से कम न था। दीपावली के पावन पर्व पर गरीबों में बापूजी द्वारा भोजन, बर्तन, वस्त्र, जूते-चप्पल तथा अन्य जीवनोपयोगी आवश्यक सामग्री के साथ दक्षिणा का वितरण इन आदिवासियों के लिए पूज्यश्री के आशीर्वाद के समान है।

हमारी लोक-कल्याण की टीम के सदस्यों ने इस विषय पर यहाँ के स्थानीय ग्रामीणों के साथ बातचीत की। कोटड़ा के मनजी भाई कोटक (उम्र ५६ वर्ष) ने हमको बताया : ''कोटड़ा, गोगुन्दा में वर्षों से अब भी रोजगार के कोई विशेष अवसर नहीं हैं। ऐसे में हम लोगों के पास मजदूरी करके मुश्किल से दो वक्त की रोटी कमाने के अलावा और कोई अन्य विकल्प नहीं है। ऐसे में त्यौहार और उत्सव मनाना हमारे इलाकों के लिए कठिन होता है।''

ग्रामीणों में शराब, तम्बाकू, बीड़ी जैसे व्यसन भी हैं जो उनमें आर्थिक कमजोरी के साथ-साथ शारीरिक कमजोरी भी उत्पन्न कर रहे हैं। लेकिन जब से इस क्षेत्र में प्रातःस्मरणीय संत श्री आशारामजी बापू ने चरण रखे हैं, तब से इस क्षेत्र में नयी चेतना आयी है।

इस पर अपना मंतव्य प्रकट करते हुए मनजी भाई कोटक आगे कहते हैं : ''संत आशारामजी बापू के आगमन से लोगों को धर्म-कर्म की तथा स्वच्छता से रहन-सहन की युक्तियाँ तो मिलीं, साथ में व्यसनों से होनेवाले नुकसानों से भी हम परिचित हुए। यह बापूजी के सत्संग का ही प्रभाव है कि इस क्षेत्र में ९० प्रतिशत लोग जो पहले किसी-न-किसी व्यसन के आदि होकर खुद का शारीरिक तथा आर्थिक नुकसान कर रहे थे, वे अब व्यसनों से मुक्त होकर खुद का तथा अपने परिवार का पोषण करने लगे हैं। अब इस क्षेत्र में बापूजी के आशीर्वाद से चंद लोगों को छोड़कर बाकी पूरा गाँव व्यसनमुक्त है। यह बापूजी की आध्यात्मिकता का ही प्रभाव है और हम उनके आभारी हैं।''

यहाँ पर हमने ६२ वर्षीया रमाबाई पढ़ियार से बापूजी द्वारा दीपावली पर हो रहे इस सत्संग, भण्डारे व सामग्री-वितरण के विषय में जानकारी लेने हेतु पूछा : ''आपको बापूजी द्वारा आयोजित भण्डारों में सामग्री मिलती है, इसके अलावा भी कोई लाभ होता है क्या ?''

रमाबाई ने बताया : ''पूज्य बापूजी द्वारा इस गाँव के हर परिवार को अन्न, तेल, बर्तन, मिठाई, कम्बल, कपड़े, साबुन, चप्पल, पटाखे तथा नकद दक्षिणा तो मिलती ही है, किंतु उससे विशेष हम लोगों के अहोभाग्य हैं कि बापूजी जैसे संत, जो पूरे देश में घूम-घूमकर लोगों को सच्चा ज्ञान दे के सही रास्ते ले जाने का दैवी कार्य कर रहे हैं, ऐसे संत का दिवाली के अवसर पर हमारे गाँव के आँगन में दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त कर हम धन्य हो जाते हैं।''

रमाबाई ने आगे कहा : ''हमारे गाँव के पुरुष दारू पीते थे। दारू पीकर अपनी पत्नियों को मारना-पीटना तथा उनके साथ पशुतुल्य व्यवहार करना तो आम बात हो गयी थी। किंतु बापूजी के दर्शन के पुण्य-प्रताप से अब हमारे गाँव में कोई पुरुष दारू

का व्यसन नहीं करता है । अब हम महिलाएँ अपने घर में सुरक्षित तथा गौरव के साथ रह रही हैं ।

यहाँ पर गरीबों से मकई पिसवाने के प्रति किलो एक-दो रुपये लिये जाते थे और उसमें भी हेराफेरी होती थी । पूज्य बापूजी ने आटा पिसवाने की मशीन लगवाकर आदिवासियों के लिए निःशुल्क आटा पीसने की व्यवस्था करवा दी । अब हमें सही माप-तौल मिल रहा है । इससे यह इलाका बापूजी को अपना तारणहार और गरीबनिवाज मानता है ।''

ऐसे कई प्रसंग हमें ग्रामीणों के साथ बातचीत करने से मालूम हुए । गोगुन्दा के सरपंच श्री प्रेमसिंह के साथ बातचीत के दौरान हमने पूछा : ''बापू के बारे में अखबारों व टी.वी. चैनलों में जो नकारात्मक कार्यक्रम चलाये गये तथा बापू के ऊपर जो आरोप लगाये गये, इस विषय में आपको कुछ जानकारी है ?''

श्री प्रेमसिंह ने हमें बताया : ''हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि बापूजी जैसे महान संतों पर आजकल के कुछ बिकाऊ पत्रकारों द्वारा गैरजिम्मेदाराना व सत्य से कोसों दूर ऐसे आरोप लगाये गये । इससे बापूजी जैसे संतों को तो कोई फर्क नहीं पड़ता किंतु समाज की ही हानि होती है । लाखों-करोड़ों लोग उनकी वाणी से प्रेरणा प्राप्त कर जीवन जीने की कला सीख रहे हैं तथा हारे हुए को हिम्मत, रोगी को औषधि, जिज्ञासु को ज्ञान और समाज को नयी चेतना मिल रही है । हमारे गाँव में बापूजी के आगमन से लोगों को एक नयी चेतना मिली है । ऐसे पत्रकार व चैनलवाले जो बापूजी से द्वेषभाव रख के लिखते और बोलते हैं, वे वास्तव में हमारा ही अहित कर रहे हैं, देश व समाज का ही अहित कर रहे हैं । इसलिए हम गाँववालों ने ऐसे अखबार और चैनलों का बहिष्कार करने का निर्णय लिया है ।''

हमारे लोक-कल्याण के पत्रकार-दल ने गाँव में कइयों के अभिप्राय लिये, जिनका वर्णन यहाँ सम्भव नहीं है । हरेक ग्रामीण ने एक-समान स्वर में बापूजी के प्रति श्रद्धा तथा अहोभाव व्यक्त किया ।

हमारे दल की श्री मिनल चौहान ने आश्रम में सेवारत एक साधक भाई से बातचीत की तो उसने बताया : ''पूज्य बापूजी पिछले २८-३० वर्षों से इस क्षेत्र के गरीबों व जरूरतमंदों में जीवनोपयोगी सामग्रियाँ जैसे - कम्बल, कपड़े, राशन, बर्तन, मिठाई के साथ नकद दक्षिणा का भी वितरण करते आ रहे हैं । किंतु इस बार इस क्षेत्र के साथ ओड़िशा में आयी भीषण बाढ़ से जो असरग्रस्त हुए हैं, उनके लिए भी बापूजी के आदेश से कटक, बलांगीर व केन्द्रपाड़ा जिलों में विशेष भण्डारे तथा जीवनोपयोगी सामग्री-वितरण के आयोजन हुए ।''

इसके बाद अहमदाबाद आश्रम में भी आश्रम के आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों हेतु भण्डारा तथा सामग्री-वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

हमारा लोक-कल्याण पत्रकार दल उदयपुर (राज.) के सुदूर ग्रामीण अंचलों का दौरा करके केवल यह देखने गया था कि ग्रामीण गरीब, आदिवासी लोग किस तरह से दिवाली का त्यौहार मनाते हैं, किंतु संत आशारामजी बापू के पावन प्रेरक सान्निध्य में यहाँ के गरीब आदिवासी सत्संग, भजन व भक्तिरस में डूबकर बापू से नयी प्रेरणा, आशा, उत्साह, उमंग, मार्गदर्शन व आशीर्वाद प्राप्त कर हरिभक्ति के रस से सराबोर हो के एक अनोखी, अलौकिक दिवाली मना रहे थे । जिसे देखकर हमारे चार सदस्यों के दल को सुखद आश्चर्य हुआ । साथ ही मन में एक सवाल भी उत्पन्न हुआ कि क्या आशारामजी बापू के विषय में नकारात्मक टीका-टिप्पणी करनेवाले पत्रकारों को बापू के इन सेवाकार्यों की जानकारी भी है या नहीं ? और यदि वे बापू के इन सेवाकार्यों से परिचित नहीं हैं तो इन्हें देख-समझकर क्या वे इन्हें अपने अखबार में या चैनल पर स्थान देंगे ? बापू के विषय में गैरजिम्मेदाराना बयानबाजी करनेवाले एवं बेबुनियाद आरोप गढ़नेवाले अखबार व चैनलवाले बापू के इन दैवी कार्यों को क्या समाज में बतायेंगे ? **- लोक कल्याण पत्रकार संघ** ❑

अमृतफल आँवला

आँवला चाहे हरा हो या सूखा, जो भी इसका नियमित सेवन करेगा, उसकी जीवनशक्ति में प्रचंड वृद्धि होगी, वह निरोग रहेगा।

आँवला मस्तिष्क को तेज, श्वासरोगों को दूर, हृदय को मजबूत और नेत्रज्योति व आँतों की कार्यशक्ति में वृद्धि तो करता ही है, साथ ही यकृत को स्वस्थ बनाकर पाचनशक्ति में वृद्धि भी करता है। यह रक्तशुद्धि एवं रक्तसंचार में गुणकारी है तथा वीर्य का स्रोत है। यह आयुवर्धक तथा सात्त्विक वृत्ति उत्पन्न करके ओज एवं कांति को बढ़ानेवाला है।

आँवले को विटामिन 'सी' का भंडार कहा जाता है। स्वस्थ रहने के लिए हमें रोज जितनी मात्रा में विटामिन 'सी' की आवश्यकता होती है, वह केवल एक आँवला ही पूरा कर सकता है।

विटामिन 'सी' शरीर के लगभग ३०० कार्यों में अत्यधिक सहायक होता है। मस्तिष्क के कार्यों में विटामिन 'सी' की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए साधकों को नियमित रूप से आँवले का सेवन करना चाहिए।

संतरे की तुलना में आँवले में २० गुना ज्यादा विटामिन 'सी' पाया जाता है। १०० ग्राम आँवले में ६०० मि.ग्रा. विटामिन 'सी' होता है, जबकि १०० ग्राम संतरे में ३० मि.ग्रा. ही विटामिन 'सी' होता है और सेवफल की तुलना में आँवले में १६० गुना विटामिन 'सी' तथा ३ गुना प्रोटीन होता है। आश्चर्य की बात यह है कि आँवले को उबालने, पीसने, भाप में पकाने या सुखाने पर भी उसमें उपस्थित विटामिन 'सी' की मात्रा में कमी नहीं आती है। यह गुण किसी भी अन्य फल या साग-सब्जी में नहीं होता।

मासिक धर्म के दौरान अधिक रक्तस्राव होने से महिलाओं में आनेवाली कमजोरी आँवले के सेवन से कम होती है।

रोज लगभग २० से ३० ग्राम आँवले का मुरब्बा या चूर्ण खाने से भरपूर विटामिन 'सी' मिलता है, साथ ही पेट भी साफ रहता है। हृदयरोग में आँवले का मुरब्बा लाभकारी है। मधुमेह के रोगियों को ठंडी के मौसम में ताजे आँवले चबाकर खाने से या उसके रसपान से लाभ होता है। ठंडी के मौसम में ३-४ महीने तक रोज २-३ ताजे आँवले का रस सुबह खाली पेट पीने से शरीर की सुस्ती व कमजोरी दूर होती है। बुखार में आँवले के रस का सेवन करने से मरीज को कमजोरी नहीं आती।

सुबह खाली पेट आँवले का सेवन करने से अधिक लाभ होता है। इससे हलका बुखार, प्यास, जलन मिटती है। दाल-सब्जी पकाते समय उसमें आँवला डालकर उबालने से भी उसकी पौष्टिकता में वृद्धि होती है। कैंसर तथा टी.बी. जैसी खतरनाक व्याधियाँ भी आँवले के उपयोग से रोकी जा सकती हैं। स्नान करते समय आँवलों के चूर्ण का गाढ़ा घोल या उनका ताजा रस लगाकर स्नान करने से शरीर में निखार आता है और बाल रेशम जैसे मुलायम हो जाते हैं।

'जो मनुष्य आँवले के फल और तुलसीदल से मिश्रित जल से स्नान करता है, उसे गंगास्नान का फल मिलता है।' **(पद्म पुराण, उत्तर खण्ड)**

भोजन के पहले १-२ हरे आँवले खाने से पाचनशक्ति बढ़ती है। भोजन के बीच-बीच में हरे आँवले के टुकड़े चबाकर खाने से पाचनक्रिया में सहायता मिलती है। भोजन के बाद आँवले

खाने से अम्लपित्त के कारण पेट तथा गले में होनेवाली जलन शांत होती है।

सावधानी : प्रसूता स्त्रियों को आँवले नहीं खाने चाहिए। अतिशय ठंडे वातावरण में शीत और नाजुक प्रकृतिवाले व्यक्तियों को कच्चे आँवले या उनके रस का उपयोग नहीं करना चाहिए। आँवले अत्यंत शीतल होते हैं अतः सर्दी, खाँसी, कृमि, गठिया, बुखार, मंदाग्नि आदि आम, कफ व शीत प्रधान व्याधियों में मिश्री मिली हुई आँवले की सामग्रियों का त्याग करें। ऐसे व्यक्तियों को आँवले को गर्म करके या उष्ण-तीक्ष्ण द्रव्यों के साथ (जैसे चटनी बना के) उपयोग करना चाहिए।

औषधीय प्रयोग

* जो मनुष्य आँवले का रस १० से १५ मि.ली., शहद १० से १५ ग्राम, मिश्री १० से १५ ग्राम और घी २० ग्राम मिलाकर चाटता है तथा पथ्य भोजन करता है, उससे वृद्धावस्था दूर रहती है।

*** हर्र, बहेड़ा, आँवला, घी-मिश्री संग खाय।**
हाथी दाबै बगल में, तीन कोस ले जाय॥
*** हर्र, बहेड़ा, आँवला, जो शहद में खाय।**
काँख चाप गजराज को, पाँच कोस लै जाय॥
*** हर्र, बहेड़ा, आँवला, चौथी डाल गिलोय।**
पंचम जीरा डाल के, निर्मल काया होय॥

इस प्रयोग से शरीर में गर्मी, रक्त, चमड़ी तथा अम्लपित्त के रोग दूर होते हैं और शक्ति मिलती है।

* आँवला घृतकुमारी के संग पीने से पित्त का नाश होता है।

* १५-२० मि.ली. आँवलों का रस तथा एक चम्मच शहद मिलाकर चाटने से आँखों की रोशनी में वृद्धि होती है।

* सर्दी या कफ की तकलीफ हो तो आँवले के १५-२० मि.ली. रस या १ ग्राम (पाव चम्मच) चूर्ण में १ ग्राम हल्दी मिलाकर लें।

*** १-२ आँवले और १०-२० ग्राम काले तिल रोज सुबह चबाकर खाने से स्मरणशक्ति तेज हो जाती है।**

* आँवले का रस और शुद्ध शहद समान मात्रा में लेकर मिला लें। इस मिश्रण को प्रतिदिन रात के समय आँखों में आँजने से आँखों का धुँधलापन कम हो जाता है। इस मिश्रण को पीने से भी फायदा होता है।

* मैले दाँत चमकाने हों तो दाँतों पर आँवले के रस से मालिश करें। आँवले के रस में सरसों का तेल मिलाकर मसूड़ों पर हलकी मालिश करने से भी बहुत फायदा होता है।

* २५० ग्राम आँवले के चूर्ण में ५० ग्राम लहसुन पीसकर यह मिश्रण शहद में डुबाकर पंद्रह दिन तक धूप में रखें। उसके पश्चात् हररोज एक चम्मच मिश्रण खा लें। यह एक उत्तम हृदय-पोषक है। यह प्रयोग हृदय को मजबूत बनानेवाला एक सरल इलाज है।

* रक्तचाप, हृदय का बढ़ना, मानसिक तनाव (डिप्रेशन), अनिद्रा जैसे रोगों में २० ग्राम गाजर के रस के साथ ४० ग्राम आँवले का रस लेना चाहिए।

* आधा भोजन करने के पश्चात् हरे आँवलों का ३० ग्राम रस आधा गिलास पानी में मिलाकर पी लें। फिर शेष आधा भोजन करें। यह प्रयोग २१ दिन तक करें। इससे हृदय व मस्तिष्क की कमजोरी दूर होती है तथा स्वास्थ्य सुधरता है।

* सूखे आँवले तथा सूखा धनिया समान मात्रा में लेकर रात को कुल्हड़ में इकट्ठे भिगो दें। सुबह छान के मिश्री मिलाकर पियें। इससे पेशाब की जलन दूर होती है तथा मूत्ररोगों में लाभ होता है।

* दो चम्मच कच्चे आँवले का रस और दो चम्मच कच्ची हल्दी का रस शहद के साथ लेने से प्रमेह मिट जाता है। कुछ दिनों तक प्रयोग करने से मधुमेह नियंत्रण में आ जाता है तथा सभी तरह के मूत्र-विकारों से छुटकारा मिल जाता है।

* आँवले का चूर्ण गोमूत्र में घोंटकर शरीर पर लगाने से तुरंत पित्तियाँ दब जाती हैं। ❑

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

प्राणिमात्र के परम हितैषी पूज्य बापूजी एक ओर जहाँ इस लोक के मनुष्यों के लिए सुख-शांति-आनंद का खजाना लुटाते हुए सतत भ्रमण करते रहते हैं, वहीं दूसरी ओर परलोक में स्थित जीवात्माओं की तृप्ति-संतुष्टि का ख्याल भी रखते हैं। पूज्यश्री की प्रेरणा से पितरों की सद्गति के लिए सर्वपितृ अमावस्या के दिन देश-विदेश के विभिन्न आश्रमों में सामूहिक श्राद्ध का आयोजन किया जाता है। **२७ सितम्बर** को सम्पन्न हुए इस पावन पर्व को बापूजी के सान्निध्य में मनाने का सुअवसर **हरिद्वार**वासियों को प्राप्त हुआ तथा सजीव प्रसारण के द्वारा देश-विदेश के असंख्य लोगों ने लाभ उठाया।

ओड़िशा में आयी बाढ़ से पीड़ित लोगों में भण्डारे एवं आवश्यक सामग्रियों का वितरण आदि राहत सेवाकार्य तो पूज्यश्री के निर्देशानुसार तीव्र गति से चल ही रहा था, फिर भी ओड़िशावासियों की पुकार पूज्य बापूजी को अपने बीच खींच लायी और **२ अक्टूबर** को पूज्यश्री स्वयं वहाँ पहुँच गये। एक ही दिन में **ओड़िशा** में **भुवनेश्वर, केन्द्रपाड़ा** तथा **कटक** इन तीनों जगहों पर हेलिकॉप्टर द्वारा द्रुत गति से दौरा करते हुए बापूजी **दिल्ली** पहुँचे।

४ अक्टूबर को **बहरोड़, जि. अलवर (राज.)** में सत्संग-वर्षा हुई। इसी दिन शाम ५ बजे से एक सत्र **अजमेर**वासियों के नाम रहा, जहाँ पर पूज्यश्री ने एक वृद्धाश्रम का उद्घाटन भी किया। परमात्मा से हमारा वास्तविक संबंध बताते हुए बापूजी ने कहा : ''वास्तव में परमात्मदेव ही हमारा अपना है, उसके सिवाय हमारा कोई नहीं है। बोलते हैं कि बेटियाँ जमाइयों की अमानत हैं। बेटे आजकल बहुओं की अमानत हैं और शरीर श्मशान की अमानत है लेकिन यह जीवात्मा परमात्मा का परम सुहृद, प्रेमास्पद था, है और रहेगा।''

५ अक्टूबर को **भीलवाड़ा (राज.)** में सत्संग की अमृतधारा बही। मनुष्य के बुरे कर्मों के फल के बारे में पूज्यश्री ने कहा : ''बरसात की बौछार से आप छाते से, रेनकोट से बच जाते हो लेकिन अपने किये हुए गलत कर्म की जब लानत बरसती है तब वहाँ कोई छाता और रेनकोट काम नहीं देता। इसलिए ऐसा कोई नीच कर्म न करो कि मरते समय औरंगजेब की नाईं आपका आत्मा आपको कचोटे।''

५ अक्टूबर की दोपहर **उदयपुर (राज.)** और शाम का सत्र **मोड़ासा (गुज.)** की झोली में गया। यहाँ पूज्य बापूजी के सान्निध्य में गरीबों के लिए भण्डारे का आयोजन किया गया। प्रथम उन्हें मधुर भोजन-प्रसाद परोसकर तृप्त किया गया। तत्पश्चात् उनमें कपड़े, बर्तन, गर्म भोजन के डिब्बे एवं अन्य जीवनोपयोगी सामग्रियों के साथ नकद दक्षिणा का भी वितरण किया।

राजस्थान और गुजरात में सत्संग की पावन गंगा बहाते हुए पूज्यश्री **मध्य प्रदेश** पहुँचे। **६ अक्टूबर** की सुबह को **कपास्थल, जि. धार** के गरीबों में पूज्यश्री के करकमलों से मकानों एवं जीवनोपयोगी सामग्रियों का वितरण हुआ। यहाँ साधकों के सौभाग्य का वर्णन करते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''अपने साधक जितने खुश रहते हैं, हर हाल में मस्त रहते हैं, सुख-दुःख में सम रहते हैं, आत्मा-परमात्मा को अपना व अपने को परमात्मा का जानकर जितना जल्दी से उन्नत हो जाते हैं और आनंद में रहते हैं, ऐसा दूसरों को मैंने नहीं देखा।''

६ अक्टूबर (दोप.) को **शाजापुर (म.प्र.)** में हुए सत्संग में पूज्यश्री ने कहा : ''आप कभी ऐसा नहीं समझना कि बापू का आश्रम है। नहीं-नहीं !

साज उसीका है, जो बजाना जानता है।
गीत उसीका है, जो गाना जानता है।
प्रभु उसीका है, जो पाना जानता है।
और आश्रम उसीका है, जो फायदा उठाना जानता है।''

६ अक्टूबर की शाम **खिलचीपुर जि.**

राजगढ़ (म.प्र.) में सत्संग के बाद **७ अक्टूबर** को **कोटा आश्रम (राज.)** में सत्संग का एक सत्र सम्पन्न हुआ । तत्पश्चात् पूज्यश्री भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली **मथुरा (उ.प्र.)** में **८ से ११ (सुबह) अक्टूबर** तक शरद पूर्णिमा के अवसर पर भक्तों को भगवद्ध्यान के दिव्यामृत का रसपान कराने पहुँचे । यहाँ लाखों की संख्या में विशाल जनमेदनी पूज्यश्री के दीदार के लिए पलकें बिछाये बैठी थी । मथुरा की महिमा बताते हुए पूज्यश्री बोले : ''ज्ञान और प्रेमाभक्ति का माधुर्य मथकर जहाँ मोक्षरूपी मक्खन प्रकट किया जाता है, उस स्थान का नाम है मथुरा ।''

यहाँ उ.प्र. के कृषिमंत्री लक्ष्मीनारायण चौधरी भी अपने दिल में ज्ञान और भक्ति की वृद्धि करने पहुँचे । बापूजी का हार्दिक अभिनंदन करते हुए उन्होंने कहा : ''प्रातःस्मरणीय परम पूज्य बापूजी के चरणों में शत-शत नमन ! बापूजी ने आज जो यह अमृतवर्षा की है, इससे बड़ा कोई सौभाग्य हमारे व्रजवासियों का और यहाँ आये हुए भक्तगणों का नहीं हो सकता । मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि बापूजी को उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करें, जिससे भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली में बापूजी लम्बे समय तक आकर शरद पूर्णिमा जैसे अवसरों पर हमें अपना आशीर्वाद प्रदान करते रहें ।''

सत्संग के चारों दिन यमुना के उस पार से इस पार आने-जानेवाले श्रद्धालुओं के लिए निःशुल्क नावों की व्यवस्था की गयी थी ।

११ अक्टूबर की दोपहर में माधुर्य-अवतार पूज्य बापूजी **अहमदाबाद आश्रम** पधारे । शरद पूर्णिमा की शीतल चाँदनी में जहाँ चन्द्रमा अमृत छिटक रहा था, वहीं पूज्यश्री भगवद्ध्यान के द्वारा प्रेमामृत की वर्षा कर रहे थे ।

यहाँ पर भक्तों ने परिधान और फूल-मालाएँ पहनने हेतु गुरुदेव से प्रार्थना की तब भक्तवत्सल बापूजी उनकी क़ामना पूर्ण करते हुए बोले : ''हम तुम्हारी 'हाँ' में 'हाँ' करते आ रहे हैं तो कभी ऐसा भी दिन आयेगा कि तुम मेरी 'हाँ' में 'हाँ' भी कर लोगे । तुम एक बार मेरी बात स्वीकार कर लो कि उस परम पद को पा लो बस ! इसीलिए हम सब स्वीकार कर लेते हैं ।''

१२ अक्टूबर की शाम को सत्संग देकर पूज्यश्री रात्रि को **दिल्ली** प्रस्थान कर गये । इसके बाद बापूजी पुनः ओड़िशा पधारे । यहाँ ७ दिनों में ८ स्थानों पर सत्संग-गंगा प्रवाहित हुई ।

ओड़िशा में बही पूज्यश्री की सत्संग-गंगा

लम्बे इंतजार के बाद अपने बीच बापूजी को पाकर ओड़िशावासी कृतकृत्य हो गये । प्रत्येक स्थान पर श्रद्धालुओं की अथाह भीड़ उमड़ी ।

१४ से १६ अक्टूबर (सुबह) तक ओड़िशा की राजधानी **भुवनेश्वर** में मनुष्य में छिपी महान योग्यता पर प्रकाश डालते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''मनुष्य किसे कहते हैं ? **मनसा सीव्यति इति मनुष्यः ।** - जो मन से परमात्मा से संबंध जोड़ सके वही मनुष्य है । अथवा जिसके पास विवेक और श्रद्धा हो वह मनुष्य है ।''

यहाँ के सांसद डॉ. प्रसन्न पटसाणी कार्यक्रम के प्रथम दिन सत्संग-गंगा में डुबकी लगाने पहुँचे । बापूजी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा : ''मेरे निर्वाचन मण्डल में पदार्पण करने के लिए मैं अपनी तथा मेरे भुवनेश्वरवासियों की तरफ से आपका हार्दिक स्वागत कर रहा हूँ । मैं आप ही के आशीर्वाद से सर्वाधिक मतों से विजयी हुआ हूँ । आपके ज्ञान और पाण्डित्य के आगे मैं नतमस्तक हूँ । विश्व-ब्रह्माण्ड के सबसे बड़े ठाकुर (भगवान), जगत के नाथ जगन्नाथ हैं, ऐसे ही पूरे विश्व-ब्रह्माण्ड के सबसे बड़े, महान योगी हैं पूज्य श्री आशारामजी बापू ।

हे महामहिम ! हे वरेण्य संन्यासी, हे वरेण्य संत ! आपके प्रवचनों ने आज विमोहित कर दिया है अगणित भक्त-मण्डली को । आपने धैर्य, समता और संत भाव में हमारी इस धरती पर पदार्पण किया है, जिसका नाम भुवनेश्वर है ।

यहाँ मैं राजनेता के भाव में खड़ा होने की धृष्टता नहीं कर रहा हूँ, बल्कि मैं यहाँ खड़ा हुआ हूँ आपके एक अकिंचन भक्त के भाव में।''

दूसरे दिन ओड़िशा की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा कपड़ा एवं हथकरघा मंत्री **उषा देवी** भी सत्संग-अमृत का पान करने पहुँचीं। उन्होंने कहा : ''आज यह भुवनेश्वर की मिट्टी, ओड़िशा की मिट्टी पवित्र हो गयी है क्योंकि हमारे महान संत पूज्य आशारामजी बापू आज यहाँ आये हैं। हमको जो शिक्षा उन्होंने दी है, वह सब दिन के लिए है। इस जगन्नाथ की मिट्टी में पायी यह शिक्षा हम भूलेंगे नहीं और पूज्य बापूजी का सम्मान रखने के लिए उनके द्वारा दी गयी शिक्षा को हम सब अपने जीवन में उतारें।''

१६ अक्टूबर को ही पूज्यश्री **केसरापल्ली आश्रम** होते हुए **ब्रह्मपुर, जि. गंजाम** पहुँचे। शाश्वत दिवाली की कुंजियाँ देते हुए बापूजी ने कहा : ''किसीकी निंदा नहीं करो। किसीसे ईर्ष्या नहीं करो। झूठ-कपट करके दिल खराब नहीं करो तो अपना दिल स्वच्छ हो गया। घर साफ करते हैं तो एक दिन दिवाली, हृदय साफ रखते हैं तो रोज दिवाली।''

१७ अक्टूबर को **जयपुर, जि. कोरापुट** में सत्संग की महत्ता बताते हुए पूज्य बापूजी बोले : ''कितना भी बड़ा आदमी हो, सत्संग नहीं है, आत्मा-परमात्मा से जोड़नेवाली दीक्षा नहीं है तो अंत में कैसी गति हो जाय, कोई पता नहीं। इसलिए सत्संग और मंत्रदीक्षा मनुष्य-जीवन के लिए परम कर्तव्य, परम प्राप्तव्य, परम मंगलकारी एवं परम आवश्यक हैं। किसीके पास सब कुछ है किंतु सत्संग और दीक्षा नहीं है तो समझ लो उसका दुर्भाग्य है। देर-सवेर उसकी गति नीच योनियों के शरीरों में होगी।''

१८ अक्टूबर को **भवानीपटना, जि. कालाहांडी** में पूज्यश्री ने सत्संग-दान के साथ वहाँ के दरिद्रनारायणों में भण्डारा व जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण भी किया। 'भगवान में मन कैसे लगे ?' - इस उलझन को सुलझाते हुए पूज्यश्री कहते हैं : ''हम लोग क्या करते हैं कि मन को भगवान में लगाना चाहते हैं और अपने को संसार का मानते हैं इसीलिए भक्ति में फल ज्यादा नहीं होता है। ऐसा सोचें कि हम भगवान के हैं, भगवान हमारे हैं। हम भगवान के होंगे तो मन, बुद्धि भगवान में लगेंगे।''

१९ अक्टूबर को **सम्बलपुर** में और **२० अक्टूबर** को **रेमण्डा आश्रम** में सत्संग-गंगा बही। **२० अक्टूबर** को **अनगुल** के भक्तों को भी सत्संग-अमृत का पान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रेमी भक्त की महिमा बताते हुए बापूजी ने कहा : ''संसारी व्यक्ति जहाँ थक जाता है, प्रेमी उस कार्य को हँसते-हँसते कर लेता है। संसारी दूसरों पर दोषारोपण करता है, प्रेमी अपनी गलती स्वीकार करके दूसरों को यश देकर गुनगुनाता हुआ जाता है। संसारी व्यक्ति संसार में आसक्त होकर फँसता है या तो ऊबकर खिन्न होता है परंतु प्रेमी न आसक्त होता है, न खिन्न होता है।''

ओड़िशावासियों को ईश्वरीय ज्ञान एवं दिव्य प्रेम का अमृतपान कराकर पूज्यश्री **दिनांक २१** को पश्चिम बंगाल पहुँचे। **कोलकाता आश्रम** में निश्चिंत नारायण का ज्ञान देते हुए बापूजी ने कहा : ''भविष्य की चिंता या आसक्ति नहीं, भूतकाल का चिंतन नहीं और वर्तमान में 'ये मेरे हैं, मैं इनका हूँ' इस वहम को हटाओ। सब पाँच भूतों के हैं, उनके अंदर चैतन्य परमात्मा है।''

दिनांक २० तक ओड़िशा, २१ को पश्चिम बंगाल तो २२ को झारखण्ड के निवासियों के भाग्य में विश्ववंदनीय संत पूज्य बापूजी के ज्ञानामृत का लाभ लिखा हुआ था। **२२ व २३ अक्टूबर** को झारखण्ड की राजधानी **राँची** में करुणासिंधु की करुणा बरसी। ब्रह्मवेत्ता संत श्री बापूजी के दर्शन की उत्कट अभिलाषा चिरकाल से हृदय में सँजोये बैठी झारखण्ड की जनता ने

विशाल सत्संग-मैदान को बौना साबित कर दिया।

गुरु और भगवान की सुहृदता का वर्णन करते हुए बापूजी ने कहा : ''भगवान और गुरु आप जो माँगोगे वह दे डालें, ऐसा नहीं करते हैं। जिसमें आपका मंगल हो, उधर को आपको मोड़ते हैं इसीलिए कभी-कभी आपकी ख्वाहिश के विपरीत भी हो तो आप समझ लेना कि भगवान हमें उचित देना चाहते हैं, हमारी ख्वाहिश अनुचित है।''

इसके बाद शुरू हुई पूज्य बापूजी की अनोखी दिवाली। जहाँ लोग पटाखे, मिठाई आदि के द्वारा अपने ही घर-मोहल्ले में दिवाली मनाते हैं, वहीं विश्वात्मा बापूजी गरीब, आदिवासी इलाकों में जाकर उनके दुःख-दर्द दूर करके दिवाली मनाते हैं। **राजस्थान** में **२५ अक्टूबर** को **गोगुन्दा** और **२६ अक्टूबर** को **सुबह कोटड़ा** व **दोपहर को सिरोड़ी जि. सिरोही** में हुए भण्डारों में गरीब आदिवासियों में कपड़े, बर्तन, गर्म भोजन के डिब्बे, जूते-चप्पल एवं अन्य जीवनोपयोगी सामग्रियों के साथ नकद दक्षिणा का भी वितरण किया गया। सिरोड़ी के बाद **अनादरा, मेहसाणा, कलोल** से होते हुए पूज्यश्री रात्रि ११ बजे **अहमदाबाद** पहुँचे और यहाँ चल रहे 'विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर' में बच्चों को ज्ञान-आनंदमय दिवाली का तोहफा दिया। दीपावली एवं नूतन वर्षारम्भ महोत्सव के लिए एकत्रित श्रद्धालुओं ने भी नूतन वर्ष के पूर्व की यह रात्रि भगवद्ज्ञान-ध्यान से मधुमय बनायी।

अहमदाबाद आश्रम में बापूनगर के गरीबों हेतु जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण व भण्डारे का आयोजन हुआ। इसमें कपड़े, गर्म भोजन के डिब्बे, स्टील के डिब्बे, मिठाई, खजूर, आँवले का मुरब्बा, चटनी व अन्य खाद्य सामग्री, तेल, साबुन, माचिस, तुलसी-त्रिकटु गोलियाँ, लॉकेट, कैलेण्डर, चप्पल आदि के साथ नकद दक्षिणा भी दी गयी। उनको मिष्टान्न-प्रसाद के द्वारा भी तृप्त किया गया।

पूज्यश्री ने कहा : ''दीपावली का महत्त्व प्राचीन परम्परा से भी है और शास्त्रीय ढंग से भी है। विश्व के जो भी मजहब-पंथ हैं, उनमें सबसे ज्यादा और सुखदायी पर्व यदि कहीं हैं तो वे हिन्दुस्तान में हैं, हिन्दू संस्कृति में हैं और उन सुखद और आनंददायी पर्वों में पर्वों का पुंज है दिवाली।''

पूज्य बापूजी **१ नवम्बर** को **निवाई गौशाला** में एकांतवास के लिए पधारे। अवसर था गोपाष्टमी (३ नवम्बर) का। पूज्यश्री के आगमन का पता चला राजस्थान के राणों को। अपने प्यारे सद्गुरुदेव के दर्शन करने जयपुर, सवाई माधोपुर, कोटा तथा आसपास के असंख्य लोगों का जनसैलाब उमड़ा। फिर क्या,

बापू तुम्हें भक्तों के बीच आना पड़ेगा,
सत्संग सुनाना पड़ेगा,
गउओं के बीच गुनगुनाना पड़ेगा।

फिर दोपहर को गौसेवा, विशाल भण्डारा और विशाल सत्संग-आयोजन सहज ही सम्पन्न हुआ, जिसका दीदार करते ही बनता था। ❑

संजीवनी गोली

यह गोली व्यक्ति को शक्तिशाली, ओजस्वी, तेजस्वी व मेधावी बनाती है। इसमें सभी रोगों का प्रतिकार करने तथा उन्हें नष्ट करने की प्रचंड क्षमता है। यह श्रेष्ठ रसायन-द्रव्यों से सम्पन्न होने से सप्तधातु व पंचज्ञानेन्द्रियों को दृढ़ बनाकर वृद्धावस्था को दूर रखती है। हृदय, मस्तिष्क व पाचन संस्थान को विशेष बल प्रदान करती है।

सेवन-विधि : २ गोली खाली पेट चूसकर खायें।

सावधानी : सेवन के बाद डेढ़-दो घंटे तक दूध न लें।

विशेष : सर्दियों में 'बाल संस्कार केन्द्र' में आनेवाले बच्चों और उनके माता-पिता के लिए 'संजीवनी गोली' वरदान है। बाल संस्कार केन्द्रों के शिक्षक उन्हें इसके लाभों की जानकारी दें।

यह सभी आश्रमों व समितियों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध है।

ओड़िशा में बाढ़ राहत सेवाकार्य

रेमण्डा (ओड़िशा) में 'बापू मंदिर' का पूज्यश्री के पावन करकमलों से उद्घाटन

ओड़िशा में हुई सत्संग-अमृत वर्षा

सम्बलपुर

भवानीपटना

अनगुल

भुवनेश्वर

ब्रह्मपुर

जयपुर

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2011)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
'D' No. MR/TECH/47.4/2011

Posting at PSO Ahmedabad between 1st to 17th of every month. ❋ Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. ❋ Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.

मकान वितरण

ऐसी दिवाली जो कहीं न देखी, कहीं न सुनी...